खण्ड-402, अंक-3
बृहस्पतिवार, 10 श्रावण, शक संवत् 1913
(1 अगस्त, 1991 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(ग्यारहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 1991)

खण्ड 402 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)

1991

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय–सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
उपस्थित सदस्य	ग
कार्यसूची में अंकित प्रश्नों को आज स्थगित करके अगले दिन लिये जाने की मांग ..	1
प्रश्नोत्तर (प्रश्न उत्तरित माने गये)	2
भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी के निधन पर शोकोद्गार	16
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के वयोवृद्ध नेता श्री श्रीपाद अमृत डांगे के निधन पर शोकोद्गार	26
भूतपूर्व मा0 सदस्यगण सर्वश्री रतन स्वरूप, राम लक्षण तिवारी, विजय बहादुर सिंह, राजेन्द्र सिंह यादव, भगौती प्रसाद सिंह, वासुदेव दीक्षित, गौरी शंकर राय, महादेव, मुख्तार अहमद किदवई, श्री नाथ सिंह तथा श्री शौनाथ सिंह के निधन पर शोकोद्गार	31

संसद टीवी

ڈاکٹر طاہر القادری

उत्तर प्रदेश विधान सभा

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :—

अतीक अहमद, श्री	इलाहाबाद
अनिल कुमार तिवारी, श्री	फैजाबाद
अरविन्द कुमार, श्री	ललितपुर
अरिदमन सिंह, श्री	आगरा
अवध पाल सिंह यादव, श्री	एटा
कृष्ण स्वरूप, श्री	बदायूं
चन्द्र शेखर सिंह, श्री	बस्ती
तेजपाल सिंह प्रधानाचार्य, श्री	हरिद्वार
नारायण दत्त तिवारी, श्री	नैनीताल
नीरज चतुर्वेदी, श्री	कानपुर नगर
पद्मा सेठ, श्रीमती	सीतापुर
पृथ्वी सिंह, श्री	हरिद्वार
फतेह बहादुर सिंह, श्री	महाराजगंज
बालचन्द्र मिश्र, श्री	कानपुर नगर
मन्नू लाल कुरील, श्री	बांदा
महावीर सिंह, श्री	बिजनौर
रविकान्त गर्ग, श्री	मथुरा
राम कुमार, श्री	खीरी
राम प्रसाद सिंह, श्री	बांदा
राम सरन वर्मा, श्री	पीलीभीत
राम सरन सिंह, श्री	अलीगढ़
वीरेन्द्र सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
सुधीर कुमार, श्री	मुजफ्फरनगर
हरक सिंह, श्री	गढ़वाल

संसद टीवी

सत्यमेव जयते

बृहस्पतिवार, दिनांक 1 अगस्त, 1991

(विधान सभा की बैठक, सभा मण्डप लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।)

कार्य सूची में अंकित प्रश्नों को आज स्थगित करके अगले दिन लिये जाने की मांग

श्री अध्यक्ष–

सदन के निश्चय के अनुसार आज प्रश्नकाल नहीं होगा, केवल निधन के निर्देश लिये जायेंगे ।

*श्री राम आसरे वर्मा–

मान्यवर, इसी सिलसिले में एक निवेदन करना चाहता हूं, यद्यपि यह अवसर ऐसा नहीं है, लेकिन महत्वपूर्ण बात है, इसलिये कहना चाहता हूं । मान्यवर, पहले यह निर्णय लिया जा चुका है कि आज प्रश्नकाल नहीं होगा लेकिन फिर भी एजेन्डे में प्रश्न छापे गये और वह सदन के पटल पर आ गया है । जब सदन के पटल पर एजेन्डा आ गया तो प्रश्न कार्यवाही के अंश माने जायेंगे और इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि आज के प्रश्नों को उत्तरित न समझा जाय, ताकि इन प्रश्नों के संबंध में जो माननीय सदस्य अनुपूरक प्रश्न पूछना चाहे, वह पूछ सकें, इसलिये आज इन प्रश्नों को स्थगित मान लिया जाय और बाद में जब समय हो, इनको लगा दिया जाय ।

श्री ऊदल–

मान्यवर, कार्य मंत्रणा समिति ने आज के बारे में अपना निर्णय किया था कि आज प्रश्न नहीं होंगे और आपने उसको यहां पढ़कर सुनाया भी था, जिस पर माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी ने अपना प्रस्ताव भी रखा था कि आज प्रश्नकाल नहीं होगा और सिर्फ निधन के निर्देश होंगे, मैं कहना चाहता हूं कि जब हाउस में इस प्रस्ताव को मंजूर कर लिया गया तो मैं समझता हूं कि इस समय अन्य प्रश्नों को यहां उठाना मुनासिब नहीं है ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय ऊदल जी ने जो विचार व्यक्त किये हैं, उसे हम स्वीकार करते हैं । माननीय वर्मा जी से कहना चाहूंगा कि मैं तो यही चाहता हूं कि निधन के निर्देश का मौका कम से कम आये, आपकी जो बात है, उसका आइन्दा से ख्याल रखा जायेगा ।

श्री राम आसरे वर्मा–

मान्यवर, मैं सिर्फ यही कह रहा हूं कि आज के प्रश्नों को स्थगित माना जाय, ताकि जो माननीय सदस्य इन प्रश्नों पर अनुपूरक प्रश्न करना चाहें, वह कर सकें ।

श्री अध्यक्ष–

अब एक निर्णय हो गया है, इसको बाद में देख लेंगे । आज प्रश्नकाल नहीं होगा और केवल निधन के निर्देश ही लिये जायेंगे । अतः अवसर की गम्भीरता को देखते हुए विभिन्न विषयों के अन्तर्गत ग्रस्त सूचनाओं को कल से लिया जायेगा ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

प्रश्नोत्तर

[गुरुवार, दिनांक 1 अगस्त, 1991 के लिए निर्धारित तारांकित प्रश्न]

जन वितरण प्रणाली के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र में चीनी व मिट्टी के तेल के वितरण की व्यवस्था

*1–श्री सुरेश प्रताप गांधी–

क्या खाद्य एवं रसद मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जन वितरण प्रणाली के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में चीनी व मिट्टी के तेल के वितरण हेतु क्या नीति बनायी गई है ? क्या सरकार वितरण व्यवस्था पूर्णतः सहकारी समितियों के माध्यम से करायेगी अथवा मिश्रित व्यक्तिगत एवं सहकारी दोनों प्रकार की संस्थाओं द्वारा पूर्व की भांति करायेगी ? नई व्यवस्था को कब तक लागू कर दिया जायेगा ?

खाद्य एवं रसद मंत्री (श्री एजाज रिजवी)–

जन वितरण प्रणाली के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में 250 ग्राम प्रति यूनिट प्रतिमाह की दर से चीनी व 5 लीटर प्रति राशन कार्ड प्रतिमाह की दर से मिट्टी का तेल आवंटित किए जाने की व्यवस्था है ।

सस्ते गल्ले की दुकानों का आवंटन करते समय सहकारी समितियों को शीर्ष प्राथमिकता दी जाती है । ऐसी सहकारी संस्थाओं के अभाव में अथवा यदि ऐसी संस्था इस कार्य को करने की इच्छुक नहीं है तब ही दुकानों का आवंटन अन्य किसी श्रेणी के प्रार्थी को निर्धारित वरीयता के अनुसार किया जाता है ।

प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

बाल विकास एवं पुष्टाहार निदेशालय द्वारा संचालित पुष्टाहार बनाने की योजना पर व्यय एवं प्रगति

*2–श्री निरबंन्द्र कुमार, श्री शिवपाल सिंह, श्री दुर्गा प्रसाद मिश्र तथा श्री ओम प्रकाश–

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि निदेशालय, बाल विकास एवं पुष्टाहार द्वारा गेहूं पर आधारित पुष्टाहार बनाने की योजना पर वर्ष 1985 से 31 मार्च, 1991 तक कितने करोड़ रुपये व्यय हुआ है ? क्या सरकार यह भी बताने का कष्ट करेगी कि यह व्यय किस मद से वहन किया गया है तथा क्या इसका नान सैड्यूल्ड डिमान्ड शासन से प्राप्त किया गया है ? यदि नहीं, तो क्यों ? क्या यह सही है कि विभाग में इस विषय की पत्रावली तत्कालीन वरिष्ठ सहायक द्वारा वर्ष 1989 में गायब कर दी गयी है तथा पिछले ढाई साल से यह योजना बन्द पड़ी है ? यदि हां, तो इसके लिये कौन जिम्मेदार है ? क्या सरकार को यह भी जानकारी है कि इस कार्य हेतु भारत सरकार द्वारा मुफ्त गेहूं दिया जाता है ? यदि हां, तो इतनी बड़ी धनराशि किस प्रकार व्यय की गई है ? क्या सरकार पूरे मामले की जांच कराकर दोषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को दंडित करने तथा योजना को जारी कराने की व्यवस्था करेगी ? यदि हां, तो कब तक ? यदि नहीं, तो क्यों ?

हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री (श्री रमापति शास्त्री)–

वर्ष 1986-87 से मार्च 91 तक रुपया 5.76 करोड़ भुगतान किया गया ।

नोट:–प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम 41 के अनुसार सभी प्रश्न उत्तरित माने गये ।

यह भुगतान लेखाशीर्षक "2235–सामाजिक सुरक्षा तथा कल्याण–02-समाज कल्याण-01–केन्द्रीय योजनागत/केन्द्र द्वारा पुरोनिधानित योजनायें–0101-20-परियोजनाओं पर भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला पुष्टाहार से किया गया है ।

जी नहीं । चूंकि ऐसी कोई व्यवस्था बजट में नहीं होती है ।

जी नहीं ।

जी नहीं ।

प्रश्न नहीं उठता ।

जी हां ।

पुष्टाहार की प्रोसेसिंग, पैकिंग एवं यातायात पर धनराशि व्यय हुई ।

प्रश्न नहीं उठता ।

योजना का कार्य प्रगति पर है ।

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में मिट्टी के तेल के वितरण में अन्तर

*3–श्री हृदय नारायण दीक्षित–

क्या खाद्य एवं रसद मंत्री कृपया बतायेंगे कि कस्बों व नगरों में प्रति यूनिट/प्रति राशन कार्ड मिट्टी के तेल की मात्रा में ग्रामीण क्षेत्रों को दिए जाने वाले प्रति यूनिट/प्रति राशन कार्ड मिट्टी के तेल की मात्रा में अंतर है ? क्या सरकार को ज्ञात है कि नगरों व कस्बों में विद्युत व्यवस्था के कारण मिट्टी के तेल की आवश्यकता कम होती है ? यदि हां, तो इस विभेद को दूर करने के संबंध में नई सरकार की क्या नीति है ?

श्री एजाज रिजवी–

जी हां,

वर्तमान समय में मिट्टी के तेल का वितरण स्केल निम्नवत् है :–

1–शहरी क्षेत्र–

10 लीटर प्रति राशन कार्ड, सामान्य श्रेणी एवं 5 लीटर प्रति राशन कार्ड ऐसे उपभोक्ताओं को जिनके पास एल0 पी0 जी0 कनेक्शन है ।

2–ग्रामीण क्षेत्र–

5 लीटर प्रति राशन कार्ड ।

जी नहीं,

ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा वैकल्पिक ईंधन उपलब्ध होने के कारण मिट्टी के तेल का प्रयोग मुख्य रूप से रोशनी के लिए होता है । परन्तु नगरों व कस्बों में मिट्टी तेल का प्रयोग ईंधन के रूप में भी किया जाता है ।

प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

प्रदेश में सूखा राहत हेतु शासन की नीति

*4–श्री सुरेन्द्र सिंह–

क्या राजस्व मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि प्रदेश भर में व्याप्त भीषण सूखा से निपटने हेतु सरकार ने कौन सी ठोस नीति बनायी है ? क्या सरकार इसका विवरण सदन के पटल पर रखेगी ? यदि हां, तो कब तक ? यदि नहीं, तो क्यों ?

राजस्व मंत्री (श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी) :–

वर्षा के विलम्ब तथा प्रदेश के कुछ भागों में पर्याप्त वर्षा न होने के कारण सम्प्रति सूखे की स्थिति उत्पन्न हो गयी है ।

सूखे के प्रभाव को कम करने के लिए सिंचाई संसाधनों नहरों, नलकूपों, पम्प कैनाल को पूरी क्षमता से चलाये जाने, कृषि कार्यों हेतु विद्युत की अधिक से अधिक उपलब्धता बनाये रखने, निजी नलकूपों, पम्प सेटों के जहां विद्युत की उपलब्धता नहीं है, डीजल उपलब्ध कराये जाने पेयजल की समस्या से ग्रस्त ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराने, पेयजल परिवहन की व्यवस्था कराने और कम पानी वाली फसलों के कार्यक्रम चलाये जाने तथा बीज आदि उपलब्ध कराने, पशुओं तथा मनुष्यों को सूखे से उत्पन्न बीमारियों की रोकथाम करने, भूमिहीन कृषक मजदूरों व अन्य निर्धन व्यक्तियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने तथा पशुओं के चारे आदि की समस्या के निराकरण करने हेतु सम्बन्धित विभागों जैसे-कृषि विभाग, ऊर्जा विभाग, उ0 प्र0 रा0 विद्युत परिषद् सिंचाई विभाग, खाद्य तथा रसद विभाग, पशुधन विभाग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, नगर विकास विभाग, उत्तर प्रदेश जल निगम, लोक निर्माण विभाग, वन विभाग तथा हरिजन एवं समाज कल्याण विभाग आदि को शासन ने स्पष्ट निर्देश दिये हैं । जिलाधिकारियों को सभी विभागों से समन्वय कर जिला स्तर पर सूखे की स्थिति से निपटने के लिए आदेश दिये गये हैं तथा जिला स्तर पर सूखा राहत योजनायें बनाने व उनका कार्यान्वयन करने और किए जाने वाले कार्यों के संबंध में आदेश दिये गये । जिला स्तर, विभागीय स्तर तथा शासन स्तर पर उसका अनुश्रवण भी किया जा रहा है ।

अतारांकित प्रश्न

हरिजन एवं समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय के अधीक्षकों को वित्तीय अधिकार देने का विचाराधीन मामला

1–श्री ओम प्रकाश तथा श्री जटाशंकर सिंह–

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री को जानकारी है कि हरिजन एवं समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय के अधीक्षकों को वित्तीय अधिकार दिए जाने का कोई मामला शासन के विचाराधीन है ? यदि हां, तो क्या शासन को इसके विरुद्ध कुछ सार्थक तथ्यों के साथ कतिपय विधायकों से संयुक्त हस्ताक्षरित कोई शिकायती पत्र भी 15 मार्च, 1991 को मिला है कि इन अधीक्षकों को वित्तीय अधिकार दिए जाने से विभाग में भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलेगा तथा हरिजन छात्रों के साथ अन्याय तथा प्रशासन में टकराव की स्थिति पैदा होगी ? यदि हां, तो इस शिकायती पत्र पर तथा इस विषय पर अब तक क्या निर्णय लिया गया है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री रमापति शास्त्री–

प्रश्नगत विषय पर विभागाध्यक्ष से प्रस्ताव प्राप्त हुआ है और प्रस्तावित कार्यवाही के विरुद्ध प्रश्नगत शिकायती पत्र भी प्राप्त हुआ है ।

सम्पूर्ण प्रकरण पर भली-भांति विचारोपरान्त निर्णय लिया जाएगा ।

उपनिदेशक लखनऊ मण्डल (प्रभारी) हरिजन एवं समाज कल्याण विभाग के विरुद्ध कतिपय अनियमितताओं के सम्बन्ध में विधायकों के संयुक्त पत्र पर कृत कार्यवाही

2—श्री ओम प्रकाश तथा श्री जटाशंकर सिंह—

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री को जानकारी है कि उपनिदेशक लखनऊ मण्डल (प्रभारी) के विरुद्ध कतिपय विधायकों का एक संयुक्त पत्र सचिव हरिजन एवं समाज कल्याण को 25 अक्टूबर, 1990 को या उसके आस-पास कतिपय अनियमितताओं एवं भ्रष्टाचार के संबंध में प्राप्त हुआ है ? यदि हां, तो शिकायती पत्र के आधार पर उपनिदेशक के विरुद्ध अब तक क्या कार्यवाही की गई ? क्या यह सही है कि उक्त उपनिदेशक द्वारा अगस्त, 1990 को राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय बालामऊ (कल्याना) जनपद हरदोई का आकस्मिक निरीक्षण किया गया था तथा वहां के किसी लिपिक को निलम्बित भी किया गया था ? यदि हां, तो उस पर क्या-क्या आरोप लगाये गये थे ? क्या उक्त आरोप की परिधि में वह सहायक आता है ? यदि नहीं, तो क्या सरकार उक्त उपनिदेशक को निलम्बित करने पर विचार करेगी ?

श्री रमापति शास्त्री—

जी हां ।

प्रश्नगत मामले की जांच करायी जा रही है ।

जांचोपरान्त सही तथ्य सामने आने पर नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी ।

बाल विकास एवं पुष्टाहार निदेशालय में व्याप्त भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में विधायकों के शिकायती पत्र पर कृत कार्यवाही

3—श्री ओम प्रकाश तथा श्री जटाशंकर सिंह—

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री को जानकारी है कि दिनांक 27 फरवरी, 1991 को नेता, भारतीय जनता पार्टी एवं कुछ अन्य विधान सभा सदस्यों के संयुक्त हस्ताक्षरयुक्त कोई शिकायती पत्र शासन को निदेशालय, बाल विकास एवं पुष्टाहार में व्याप्त कतिपय भ्रष्टाचार के संबंध में प्राप्त हुआ है ? यदि हां, तो शासन द्वारा इस दिशा में अब तक क्या कार्यवाही की गयी ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री रमापति शास्त्री—

जी हां,

प्रश्नगत प्रकरण में जांच के आदेश दे दिये गये हैं ।

प्रश्न नहीं उठता ।

हरिजन एवं निर्बल वर्ग आवास निगम के महाप्रबन्धक के विरुद्ध खुली सतर्कता जांच के कथित आदेश

4—श्री कृष्ण किंकर सिंह तथा श्री ओम प्रकाश—

विधान सभा के प्रथम सत्र 1991 के पहले शुक्रवार के लिए निर्धारित अतारांकित प्रश्न संख्या-8 के उत्तर के संबंध में क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि क्या संबंधित जांच रिपोर्ट शासन को प्राप्त हो गई है ? यदि हां, तो कब तथा उसमें क्या-क्या संस्तुतियां की गई हैं ? क्या सरकार द्वारा उन संस्तुतियों का पालन कर लिया गया है ? यदि नहीं, तो क्यों ? क्या सरकार संबंधित महाप्रबन्धक को तत्काल निलंबित किये जाने पर विचार करेगी ? यदि हां, तो कब तक ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री रमापति शास्त्री–

जी नहीं ।

प्रश्न नहीं उठता ।

जनपद अलीगढ़ की तहसील हाथरस को जिला बनाने का विचाराधीन मामला

5–श्री सुरेश प्रताप गांधी–

क्या राजस्व मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि वित्तीय वर्ष 1991-92 में प्रदेश में कितने नये जिलों का सृजन किया जाना है ? क्या अलीगढ़ जनपद की हाथरस तहसील को जिला बनाने का प्रस्ताव भी शासन के विचाराधीन है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी–

वित्तीय वर्ष 1991-92 में कितने नये जिले प्रदेश में सृजित किये जायेंगे, अभी इस संबंध में अन्तिम निर्णय नहीं लिया गया है । जिला बनाने के लिए विभिन्न स्तरों से प्राप्त प्रस्तावों का परीक्षण करने हेतु अध्यक्ष, राजस्व परिषद् की अध्यक्षता में जिला एवं मण्डल सृजन/पुनर्गठन समिति बनायी गयी है । इस समिति के समक्ष इलाहाबाद में यमुना पार, मुरादाबाद में चन्दौसी, चमोली में कर्णप्रयाग, नैनीताल में रुद्रपुर को नया जिला बनाने के प्रस्ताव विचाराधीन हैं । इसके अतिरिक्त देवरिया जनपद में पडरौना व वाराणसी जनपद में भदोही को नया जिला बनाने के प्रस्तावों पर भी अन्तिम निर्णय अभी लिया जाना शेष है ।

हाथरस को जिला बनाने का प्रस्ताव भी उक्त समिति के विचारार्थ है, व परीक्षण किया जा रहा है ।

जनपद बाराबंकी की तहसील नवाबगंज के परगना–सतरिख की टाउन एरिया जैदपुर के ग्राम–अन्दर में भूमि गाटा संख्या–502 पर निर्माण का मामला

6–श्री राम पाल वर्मा–

क्या राजस्व मंत्री कृपया बतलायेंगे कि राजस्व खसरा संख्या–502, ग्राम-अन्दर, टाउन एरिया जैदपुर, परगना–सतरिख, तहसील–नवाबगंज, जनपद–बाराबंकी की भूमि पर किस विभाग ने नाली/नाला व चकरोड का निर्माण करवाया है ? क्या अधिग्रहण के उपरान्त भूमि मालिकों को मुआवजा का भुगतान कर दिया गया है ? यदि नहीं, तो सरकार कब तक मुआवजा धनराशि का भुगतान करवाना सुनिश्चित करेगी ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री ब्रह्म दत्त द्विवेदी–

भूमि गादा संख्या–502 ग्राम-अन्दर, टाउन एरिया जैदपुर, परगना-सतरिख, तहसील–नवाबगंज, जनपद–बाराबंकी की भूमि पर किसी भी विभाग द्वारा नाली/नाला एवं चकरोड का निर्माण नहीं कराया गया है और न ही भूमि का अधिग्रहण ही किया गया है । अतः प्रतिकर भुगतान का कोई प्रश्न नहीं उठता ।

जनपद फतेहपुर में बाल विकास परियोजना हसवां में कार्यरत सुपरवाइजर के स्थानान्तरण के संबंध में प्रश्नकर्ता के पत्र पर कृत कार्यवाही

7–श्री राम पाल वर्मा–

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री कृपया बतलायेंगे कि शासनादेश संख्या–19/1/1976-कार्मिक-1, दिनांक 5-1-1976 के अनुसार सुपरवाइजर, बाल विकास परियोजना, विकास खण्ड हसवां, जनपद-फतेहपुर को कानपुर में स्थानान्तरित करने विषयक निदेशक को सम्बोधित एवं सचिव को पृष्ठांकित प्रश्नकर्ता के पत्र दिनांक 1-4-1990 पर अब तक क्या कार्यवाही की गई है ? क्या सरकार अब तक पत्र में उल्लिखित तथ्यों के आधार व शासनादेश के अनुसार स्थानान्तरण करना चाहेगी ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री रमापति शास्त्री–

माननीय सदस्य का संदर्भित पत्र स्थानान्तरण सत्र 1990 में प्राप्त हुआ । शासनादेश दिनांक 5-1-76 के क्रम में सुपरवाइजर बाल विकास परियोजना, हसवां, फतेहपुर को समायोजित करने पर सहानुभूति पूर्वक विचार किया गया लेकिन समायोजन सम्भव नहीं हो सका ।

पद रिक्त न होने के कारण स्थानान्तरण सम्भव नहीं है ।

प्रश्न नहीं उठता ।

उपनिदेशक हरिजन एवं समाज कल्याण विभाग वाराणसी मण्डल को अपने मण्डल में ही तैनाती का मामला

8–श्री ओम प्रकाश तथा श्री कृष्ण किंकर सिंह–

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री को जानकारी है कि उप निदेशक वाराणसी मण्डल, उसी मण्डल के जनपद जौनपुर के ही मूल निवासी है ? यदि हां, तो वहां उनको तैनात किये जाने का क्या औचित्य है ? क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि वर्ष 1983 से 85 तक सुल्तानपुर तैनाती (प्रोग्राम अधिकारी) तथा इससे पूर्व उप निदेशक (1989-90) आगरा मण्डल में कतिपय भ्रष्टाचार में दोष सिद्ध पाये जाने के कारण इनको मुख्यालय में सम्बद्ध किया गया था ? यदि हां, तो उसका सम्पूर्ण विवरण क्या है ? क्या सरकार इनको वाराणसी मण्डल से तत्काल हटाने तथा इनकी अनियमित तैनाती हेतु दोषी निदेशक को दंडित करने पर विचार करेगी ? यदि हां, तो कब तक ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री रमापति शास्त्री–

जी हां ।

प्रश्नगत अधिकारी की सेवानिवृत्ति अक्टूबर 1993 में है और इस बात को ध्यान में रखते हुए उनकी तैनाती अपने मण्डल में की गयी है ।

यह सही है कि वर्ष 1984-85 में जनपद सुल्तानपुर में बाल विकास परियोजना कार्यक्रम के अधीन इनके द्वारा की गयी अनियमितताओं के लिए इन्हें कार्यालय ज्ञाप संख्या 3147/26-1–87–4(47)/87, दिनांक 17-9-87 द्वारा प्रतिकूल प्रविष्टि दी गयी थी और भविष्य में अपने उत्तरदायित्व से अपने कार्य को करने के लिए सचेत

किया गया था । परन्तु यह सही नहीं है कि 1989-90 में आगरा मण्डल के कार्य-काल में इनके विरुद्ध भ्रष्टाचार के दोष सिद्ध पाये जाने के कारण इनको मुख्यालय में सम्बद्ध किया गया था । अपितु वस्तुस्थिति यह है कि आगरा मण्डल में एक अन्य अधिकारी की नियुक्ति हो जाने के कारण प्रश्नगत अधिकारी को शासन के कार्यालय ज्ञाप संख्या-2333/26-1-90, दिनांक 21 मई, 1990 द्वारा मुख्यालय से सम्बद्ध किया गया था ।

प्रश्न के शेष भाग के उत्तर का प्रश्न नहीं उठता ।

बाल विकास एवं पुष्टाहार निदेशालय में व्याप्त भ्रष्टाचार का मामला

9—श्री ओम प्रकाश तथा श्री जटाशंकर सिंह—

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री को जानकारी है कि दिनांक 2 मार्च, 1991 को कतिपय विधायकों द्वारा संयुक्त रूप से हस्ताक्षरित शिकायती पत्र निदेशालय हरिजन एवं समाज कल्याण/निदेशालय बाल विकास एवं पुष्टाहार में व्याप्त भ्रष्टाचार के संबंध में शासन के विभिन्न स्तरों पर दिया गया है ? यदि हां, तो उस पर अब तक क्या कार्य-वाही की गयी है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री रमापति शास्त्री—

प्रश्न में उपलब्ध विवरण के आधार पर समस्त संबंधित विभागों से प्राप्त जानकारी व उपलब्ध अभिलेखानुसार पत्र प्राप्त नहीं हुआ है ।

हरिजन एवं समाज कल्याण विभाग, जनपद लखनऊ में कन्टेनर की आपूर्ति में गड़बड़ी की जांच एवं कृत कार्यवाही

10—श्री कृष्ण किंकर सिंह तथा श्री ओम प्रकाश—

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री को जानकारी है कि वित्तीय वर्ष 1985-86 में लखनऊ जनपद में कन्टेनर में आपूर्ति में हुयी गड़बड़ी के मामले में तीसरी जांच हो रही है ? यदि हां, तो एक मामले में तीन बार जांच कराये जाने का क्या औचित्य है ? क्या सरकार पहली दोनों जांच रिपोर्टों को सदन के पटल पर रखते हुए उन दोनों जांच अधिकारियों के विरुद्ध जिनकी जांच रिपोर्ट से संतुष्ट न होकर तीसरी जांच करायी जा रही है, कार्यवाही करने पर सरकार विचार करेगी ? यदि हां, तो कब तक ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री रमापति शास्त्री—

प्रश्न एवं संदर्भ समिति को प्रकरण जांच पश्चात संदर्भित कर दिया गया । संगत तथ्यों पर विचारोपरान्त मामले को सर्तकता विभाग को अभिदिष्ट किया गया है तथा अभिलेख सर्तकता विभाग को सौंपे गये हैं ।

जनपद जालौन के विकास खण्ड कुठौन्द के ग्राम जुगियापुर में प्राइमरी पाठशाला खोलने की मांग

11—श्री श्रीराम—

क्या शिक्षा मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि ग्राम जुगियापुर, विकास खण्ड कुठौन्द, जनपद जालौन में प्राइमरी विद्यालय की शाखा वर्ष 1989-90 तथा वर्ष 90-91 में संचालित

थी ? यदि नहीं, तो क्यों ? क्या उक्त ग्राम में नयी प्राइमरी पाठशाला स्वीकृत होने तक जनहित में पुनः शाखा विद्यालय या नवीन विद्यालय खोला जाना सम्भव है ? यदि हां, तो कब तक ? यदि नहीं, तो क्यों ?

बेसिक एवं प्रौढ़ शिक्षा राज्य मंत्री (श्री शिव प्रताप शुक्ल)–

जी हां ।

शाखा विद्यालय खोलने की योजना नहीं है । तथापि नवीन प्राइमरी विद्यालय खोलने की जिला योजना है । वर्तमान वर्ष (1991-92) में जनपद जालौन में 8नवीन प्राइमरी विद्यालय खोले जाने का लक्ष्य निर्धारित है । जनपद के स्थान विशेष पर विद्यालय खोलने के लिए जिला बेसिक शिक्षा समिति सक्षम है । उक्त समिति के निर्णय के उपरान्त ही विद्यालय खोला जा सकेगा ।

प्रश्न नहीं उठता ।

जनपद हरदोई के निवर्तमान डी0 डी0 ओ0 के विरुद्ध प्रशासनिक कार्यवाही का प्रस्ताव

12–श्री कृष्ण किंकर सिंह तथा श्री ओम प्रकाश–

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री को जानकारी है कि निवर्तमान डी0 डी0 ओ0 हरदोई जिनका स्थानान्तरण 1990 में जनपद कानपुर के लिए कर दिया गया है जबकि उनके हरदोई में कार्यकाल वर्ष 1985-86 में परियोजनाओं हेतु खाद्य तेल के वितरण में घपला करने, वर्ष 1990 में आंगन वाड़ियों की कार्यकत्रियों की नयी नियुक्तियों में पद प्रभाव का प्रयोग करने, वर्ष 1989-90 में बाल विकास परियोजना के समस्त कर्मचारियों एवं अधिकारियों के आनरिया के धन को हड़पने तथा वर्ष 1990-91 में कार्यालय की सरकारी टाइपराइटर को किराये पर चलाने जैसे कई शिकायतें एवं आरोप है ? यदि हां, तो उसके विरुद्ध जांच न कराने तथा उनको उनके गृह जनपद में तैनात करने का क्या औचित्य है ?क्या सरकार उनको तत्काल निलंबित करके उपरोक्त सभी मामलों की जांच कराने का आदेश करेगी ? यदि हां, तो कब तक ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री रमापति शास्त्री–

जी हां, आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों की नियुक्ति में गड़बड़ी तथा खाद्य तेल वितरण में घपला आदि शिकायतें थी । संयुक्त निदेशक, मुख्यालय तथा अपर जिलाधिकारी, हरदोई की प्रारम्भिक जांच में आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों की नियुक्ति में गड़बड़ी प्रथम दृष्टया प्रमाणित पाई गई जिसके लिये उनके विरुद्ध प्रशासनिक कार्यवाही प्रस्तावित है । उन्हें गृहजनपद में तैनात नहीं किया गया है ।

जनपद लखनऊ के ब्लाक काकोरी के ग्राम भरोसा में स्थित प्राइमरी कन्या पाठशाला की सेवा निवृत सहायक अध्यापिका श्रीमती शारदा देवी के अवशेष देयों का भुगतान

13–श्री राम पाल वर्मा–

क्या बेसिक शिक्षा मंत्री कृपया बतलायेंगे कि प्राइमरी कन्या पाठशाला 2 ग्राम भरोसा, ब्लाक काकोरी, जनपद लखनऊ से सेवा-निवृत्त सहायक अध्यापिका श्रीमती शारदा देवी चौधरी को वर्ष, 1985 में देय समयमान वेतनमान की स्वीकृति एवं तदनुसार वेतन एरियर,

संशोधित पेंशन व देय महंगाई राहत के भुगतान विषयक बेसिक शिक्षाधिकारी, लखनऊ को सम्बोधित एवं सचिव शिक्षा अनुभाग-5 को पृष्ठांकित प्रश्नकर्ता के पत्र दिनांक 29-8-1990 पर कोई निर्णय लिया गया है ? यदि हां, तो सेवा निवृत्त सहायक अध्यापिका को पिछले 5 वर्षों से भुगतान न करने का औचित्य क्या है ? सरकार कब तक समयमान वेतनमान की स्वीकृति करके वेतन एरियर एवं तदनुसार संशोधित पेंशन, महंगाई राहत, नकदीकरण आदि का भुगतान कब तक करायेगी ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री शिव प्रताप शुक्ल–

जी हां ।

राजाज्ञा संख्या 5909/15-8-88-3004(10)/87 दिनांक 19-1-89 द्वारा पेंशन सरलीकरण/उदारीकरण योजना लागू की गयी थी, जिसके आधार पर श्रीमती चौधरी के संशोधित पेंशन मार्च 1991 से दी जा रही है । अवशेष का भी भुगतान कर दिया गया है ।

समयमान वेतनमान नियमों के अन्तर्गत देय नहीं है । नियमों के अंतर्गत संशोधित पेंशन महंगाई राहत का नियमित भुगतान मार्च 91 से हो रहा है । संशोधित पेंशन के अवशेष का भुगतान हो चुका है । नकदीकरण परिषदीय अध्यापकों को अनुमन्य नहीं है ।

प्रश्न नहीं उठता ।

जनपद जालौन की तहसील कालपी के ग्राम गुलौली में जूनियर हाई स्कूल खोलने की मांग

14–श्री श्रीराम–

क्या बेसिक शिक्षा मंत्री को जानकारी है कि तहसील कालपी, जनपद जालौन के ग्राम गुलौली और उसके मजरा ग्रामों सहित आबादी लगभग 5000 होते हुए भी ग्राम गुलौली में मात्र प्राइमरी पाठशाला है ? यदि हां, तो क्या वहां जूनियर हाई स्कूल स्तर तक का जिला परिषदीय/ शासकीय विद्यालय खुलवाने की शासन की कोई योजना है ? यदि हां, तो कब तक स्कूल खोला जायेगा ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री शिव प्रताप शुक्ल–

जी हां ।

सीनियर बेसिक स्कूल (जू0 हा0 स्कूल) खोलने की जिला योजना है । जनपद जालौन में वर्तमान वित्तीय वर्ष 1991-92 में 8 सीनियर बेसिक विद्यालय खोलने का लक्ष्य निर्धारित है । जनपद के स्थान विशेष पर विद्यालय खोलने के लिये जिला बेसिक शिक्षा समिति सक्षम है । उक्त समिति के निर्णयोपरान्त ही विद्यालय खोला जा सकेगा ।

प्रश्न नहीं उठता ।

जनपद जालौन की तहसील कालपी में भवन हीन विद्यालयों के भवनों के निर्माण की मांग

15–श्री श्रीराम–

क्या बेसिक शिक्षा मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जनपद जालौन की तहसील कालपी में ऐसे कितने परिषदीय बालक/बालिका प्राइमरी/जूनियर विद्यालय हैं जो भवन विहीन हैं या जीर्ण शीर्ण भवनों में संचालित हैं ? क्या मंत्री जी यह भी बतायेंगे कि ऐसे कितने

उपरोक्त प्रकार के विद्यालय हैं जिनकी मरम्मत के लिये वर्ष 1990-91 में धनराशि प्रदान की गयी है ? क्या जीर्ण शीर्ण तथा नवीन विद्यालय भवनों का निर्माण वर्तमान वर्ष में भी किया जाना प्रस्तावित है ? यदि हां, तो कब तक ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री शिव प्रताप शुक्ल–

जनपद जालौन की तहसील कालपी में अब तक निर्माण हेतु स्वीकृत भवनों को छोड़कर दो प्राइमरी स्कूल और दो जूनियर हाई स्कूल भवन विहीन हैं ।

कोई विद्यालय जीर्ण-शीर्ण भवनों में संचालित नहीं है ।

प्रश्न नहीं उठता ।

पूर्व स्वीकृति के अनुसार वर्ष 91-92 में 4 प्राइमरी पाठशाला भवनों का निर्माण कराया जा रहा है । शेष भवन विहीन विद्यालयों का निर्माण वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर होगा ।

मुख्य प्रोबेशन अधिकारी द्वारा की गई नियुक्तियों की जांच

16–श्री दुर्गा प्रसाद मिश्र–

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि मुख्य प्रोबेशन अधिकारी द्वारा वर्ष 1988 से आज तक तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के पद पर कितनी नियुक्तियां की गयी हैं ? क्या सरकार यह भी बतायेगी कि क्या वह इन नियुक्तियों के लिए अधिकृत है ? क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि जनवरी, 1990 से पूर्व इनके द्वारा जो भी नियुक्तियां की गयी हैं उनमें न तो रोजगार कार्यालयों से नाम मंगाये गये हैं और न ही समाचार पत्रों में विज्ञापन दिये गये हैं ? यदि हां, तो दोषी अधिकारी के विरुद्ध क्या कार्यवाही की गयी ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री रमापति शास्त्री–

प्रश्नगत सम्पूर्ण प्रकरण की जांच कराई जा रही है । जांचोपरान्त नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी ।

जनपद लखीमपुर खीरी की तहसील निघासन के कतिपय ग्रामों की बाढ़ से सुरक्षा

17–श्री निरवेन्द्र कुमार–

क्या राजस्व मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जनपद लखीमपुर खीरी की निघासन तहसील में बाढ़ से घर गिर जाते हैं तथा दो से तीन फिट तक पानी गांवों में भरा रहता है ? यदि हां, तो क्या इन ग्रामों को ऊंची जमीनों पर बसाने की कोई योजना है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी–

जनपद लखीमपुर खीरी की तहसील निघासन में कुछ ग्राम बाढ़ से घिर जाते हैं, जिनमें पानी भर जाता है, परन्तु कुछ दिन के बाद पानी निकल जाता है ।

अतः नीची भूमि पर बसे ग्रामों को ऊंची भूमि पर बसाये जाने की कोई योजना नहीं है, बल्कि प्रभावित परिवारों को बाढ़ सुरक्षा केन्द्रों तथा चौकियों पर अस्थायी रूप से आश्रय दिया जाता है व सहायता प्रदान की जाती है ।

18–श्री राम ललित चौधरी–

[1ले सोम में अता0 प्र0 सं0 24 के अन्तर्गत स्थानान्तरित]

अनुसूचित जाति की जनता को न्याय प्रदान करने हेतु अनुसूचित जाति कमीशन खोलने की मांग

19–श्री किशन गोपाल–

क्या हरिजन समाज कल्याण मंत्री कृपया बतायेंगे कि अनुसूचित जाति की जनता को न्याय दिलाने व उनके ऊपर हो रहे अत्याचार को रोकने हेतु केन्द्रीय सरकार की तरह, उ0 प्र0 शासन में भी अनुसूचित जाति कमीशन खोलने की कोई योजना है ? यदि हां, तो कब तक उक्त आयोग गठित होगा ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री रमापति शास्त्री–

जी नहीं ।

प्रश्न नहीं उठता ।

20–श्री लाल चन्द्र मौर्य–

[आश्वासन समिति के विचाराधीन होने के कारण निरस्त]

21–श्री निरवेन्द्र कुमार–

[2रे सोम में अता0 प्र0 सं0 80 के अन्तर्गत स्थानान्तरित]

बाल विकास एवं पुष्टाहार निदेशालय द्वारा बालाहार एवं पुष्टाहार की आपूर्ति का मामला

22–श्री दुर्गा प्रसाद मिश्र, श्री महराज सिंह यादव तथा श्री नरेन्द्र सिंह–

क्या हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री को जानकारी है कि निदेशालय बाल विकास एवं पुष्टाहार द्वारा विगत दो साल से गर्भवती महिलाओं को तथा हरिजन बच्चों को दिए जाने वाले बालाहार एवं पुष्टाहार की आपूर्ति नहीं की गयी है ? यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं ? क्या यह सही है कि इससे पूर्व प्रदेश स्तर पर सम्पूर्ण बालाहार एवं पुष्टाहार की आपूर्ति का कार्य एक स्थानीय एजेन्सी द्वारा किया जाता रहा है और उसके द्वारा बोगस आपूर्ति करने तथा समय से आपूर्ति न देने तथा अन्य एजेन्सियों की अपेक्षा ऊंची दरों पर दिए जाने के कारण ही आपूर्ति न लेने का निर्णय किया गया है ? क्या सरकार यह भी बतायेगी कि क्या विभाग ने ऐसी एजेन्सियों की एक लिस्ट भी बनायी है ? यदि हां, तो क्या सरकार उस लिस्ट को सदन के पटल पर रखने का कष्ट करेगी? क्या सरकार को इस बात की भी जानकारी है कि उसमें एक एजेन्सी द्वारा निदेशालय से आपूर्ति करने का कार्य पुनः लेने का पूरा प्रयास किया जा रहा है ? यदि हां, तो इस विषय पर सरकार की क्या नीति होगी ?

श्री रमापति शास्त्री–

जी नहीं ।

प्रश्न नहीं उठता ।

जी नहीं ।

जी नहीं ।

प्रश्न नहीं उठता ।

जी नहीं ।

प्रश्न नहीं उठता ।

जनपद हरदोई के चकबन्दी विभाग में कार्यरत बन्दोबस्त अधिकारी के विरुद्ध प्रश्नकर्ता के पत्र पर कृत कार्यवाही

23—श्री राम पाल वर्मा—

क्या राजस्व मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि प्रश्नकर्ता का कोई शिकायती पत्र जो बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी हरदोई के भ्रष्ट कारनामों के संबंध में था, दिनांक 9-10-90 के पश्चात उन्हें प्राप्त हुआ ? यदि हां, तो उस पर अब तक क्या कार्यवाही की गयी ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी—

जी हां ।

जांच के आदेश चकबन्दी आयुक्त को दे दिये गये हैं । जांच आख्या प्रतीक्षित है ।

प्रश्न नहीं उठता ।

जनपद उन्नाव के जिला पूर्ति कार्यालय में कार्यरत अतिरिक्त लिपिक का स्थानान्तरण तथा अवशेष वेतन का भुगतान

24—श्री भगवती सिंह विशारद—

क्या खाद्य एवं रसद मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जनपद उन्नाव के जिलापूर्ति कार्यालय में 8 (आठ) स्वीकृत लिपिकों के विरुद्ध 9 (नौ) लिपिक कार्यरत हैं, जिनमें से एक लिपिक को अगस्त 1990 से वेतन नहीं, मिल रहा है ? यदि हां, तो क्या इस संबंध में जिला प्रशासन द्वारा कोई कार्यवाही की गई है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री एजाज रिजवी—

जी हां ।

जनपद उन्नाव में लिपिक के 8 स्वीकृत पदों के विरुद्ध 9 लिपिक कार्यरत थे । स्वीकृत पद से एक लिपिक के अधिक कार्यरत होने के कारण एक लिपिक के वेतन का भुगतान अगस्त, 1990 से नहीं किया जा सका था ।

जी हां । जिला प्रशासन ने खाद्य आयुक्त, उत्तर प्रदेश से अनुरोध किया था कि लिपिक का एक अतिरिक्त पद स्वीकृत कर दिया जाए अथवा एक लिपिक का उनके अनुरोध पर अन्यत्र स्थानान्तरण कर दिया जाए । तदनुसार खाद्यायुक्त ने 23 जुलाई, 1991 के आदेश द्वारा उन्नाव में कार्यरत एक लिपिक का स्थानान्तरण रायबरेली कर दिया है । इसके साथ ही सम्बन्धित कर्मचारी को अगस्त, 1990 से अवशेष वेतन के तत्काल भुगतान के आदेश भी कर दिए हैं ।

जनपद बाराबंकी के ग्राम सभा जेबली के लेखापाल का निलम्बन

25–श्री दुर्गा प्रसाद यादव–

क्या राजस्व मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि ग्राम सभा जेबली, जनपद बाराबंकी के ग्राम प्रधान ने अपने ही पुत्र सुनील के नाम से फर्जी बरासत कराकर स्व0 नरायन (हरिजन) की भूमि पर अनधिकृत रूप से कब्जा कर रखा है ? यदि हां, तो क्या उक्त ग्राम प्रधान द्वारा स्व0 बदलू वर्मा की बाग से मिली ग्राम समाज की भूमि पर लगभग 10 पेड़ शीशम के अवैध तरीके से बेंचक उसकी धनराशि अपना मकान बनवाने में खर्च कर ली है ? यदि हां, तो क्या दोषी ग्राम प्रधान को निलंबित करके दंडित किया जायेगा ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी–

जी हां । भूलेख निरीक्षक द्वारा दिनांक 16-9-1987 को प्रपत्र प0 क0-11-क पर पारित आदेशानुसार उत्तराधिकारी के रूप में दर्ज किया गया । इस अनियमितता के लिए सम्बन्धित लेखपाल को लिम्बित कर दिया गया है और भूलेख निरीक्षक के विरुद्ध निलम्बन की कार्यवाही प्रारम्भ की जा चुकी है ।

जिलाधिकारी से प्राप्त सूचनानुसार भूखण्ड सं0 181/0-1-0 बंजर में स्थित शीशम, बेल, नीम और चिलबिल के कुल 9 (नौ) पेड़ों को गिरीश चन्द्र, आत्मप्रकाश व प्रवेश कुमार पुत्रगण परशुराम ने महप्यादीन ठेकेदार के हाथ बेंच दिया जो दिनांक 26-12-1990 को कट गये हैं । विक्रेतागण के विरुद्ध जमीनदारी विनाश अधिनियम की धारा-122-बी के अन्तर्गत क्षतिपूर्त का वाद तहसीलदार, फतेहपुर, बाराबंकी के न्यायालय में विचाराधीन है ।

जनपद मिर्जापुर की तहसील चुनार के परगना अहरौरी के ग्राम सभा-नागनार हरैया में चकबन्दी प्रक्रिया में हुई त्रुटियों का निराकरण

26–श्री भागवत–

क्या राजस्व मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि ग्राम सभा नागनार हरैया, परगना अहरौरी, तहसील चुनार, जनपद मिर्जापुर में चकबन्दी कर्मचारियों द्वारा किये जा रहे भ्रष्टाचार के संबंध में दिनांक 15-11-90 से जून, 91 तक राजस्व मंत्री/चकबन्दी आयुक्त द्वारा चकबन्दी प्रक्रिया रोकने के अनेक आदेश देने के उपरान्त भी चकबन्दी प्रक्रिया नहीं रोकी गयी है ? यदि हां, तो क्यों ? क्या यह प्रक्रिया रोकी जाएगी ? यदि हां, तो कब तक ? क्या आदेशों की अवहेलना करने वाले कर्मचारियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही की जायेगी ? यदि हां, तो क्या ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी–

मामले की स्थल पर जांच की गयी । पाया गया कि उक्त ग्राम में चकों के सीमांकन का कार्य प्रगति पर था अतः इस स्थिति में चकबन्दी प्रक्रिया रोका जाना उचित नहीं पाया गया । अब कब्जा परिवर्तन भी कराया जा चुका है । सभी कृषक अपने-अपने नये चकों पर काबिज हो गये हैं । पायी गयी त्रुटियों के निराकरण की भी कार्यवाही की गयी ।

जी नहीं । प्रश्न नहीं उठता ।

27–श्री लाल चन्द्र मौर्य–

[2रे मंगल में अता0 प्र0 सं0 62 के अन्तर्गत स्थानान्तरित]

जनपद वाराणसी के अकाल ग्रस्त क्षेत्रों में राहत योजनाओं का विवरण

28–श्री राजेश कुमार–

क्या राजस्व मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि वाराणसी जनपद में वर्ष 1991 में अनावृष्टि के कारण जनपद का कितना भाग अकाल ग्रस्त हुआ है ? इन अकाल ग्रस्त क्षेत्रों में शासन द्वारा कौन-कौन सी राहत योजनायें तैयार की गयी हैं ?

श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी–

वर्ष 1991 में जनपद वाराणसी का कोई भी भाग अकाल ग्रस्त नहीं हुआ । दिनांक 26-7-91 तक जून, जुलाई 91 में 127.0 मिमी0 वर्षा हुई । कम वर्षा के कारण जनपद के कुल 4346 राजस्व ग्रामों में से 2623 राजस्व ग्राम प्रभावित हुए हैं । जिनमें 1007 ग्राम तहसील वाराणसी, 521 ग्राम भदोही, 743 ग्राम ज्ञानपुर तथा 352 ग्राम चकिया में हैं । जनपद में कुल 1,63,632 हेक्टेयर क्षेत्र प्रभावित है, परन्तु तहसील चंदौली और सकलडीहा में विशेष प्रभाव नहीं है । कम वर्षा के कारण उत्पन्न ऊसर सील चंदौली और सकलडीहा में विशेष प्रभाव नहीं है । कम वर्षा के कारण उत्पन्न असर को कम करने के लिए की गई कार्यवाही निम्नांकित है :–

1–जनपद में विभिन्न सिंचन स्रोतों जैसे–नहर, राजकीय नलकूप, पम्प कैनाल आदि के माध्यम से सूखे से प्रभावित क्षेत्रों की सिंचाई हेतु व्यवस्था की गई है । खराब राजकीय नलकूपों की तत्काल मरम्मत कराकर तथा उनमें विद्युत आपूर्ति में बृद्धि करके अधिक से अधिक सिंचाई सुविधा सुलभ कराने का प्रयास किया जा रहा है । जनपद के सुलभता पर्याप्त रूप में सुनिश्चित की जा रही है ।

2–प्रभावित कृषकों के भू-राजस्व देयों की वसूली में निलम्बन अथवा छूट की भी नियमानुसार व्यवस्था है ।

3–कृषि कार्यों हेतु विद्युत आपूर्ति 10 से 12 घंटे तक प्रतिदिन की जा रही है ।

4–डीजल खाद्यान्न, मिट्टी तेल व अन्य उपभोक्ता सामग्री की जनपद में कमी नहीं है ।

5–पेयजल हेतु जनपद में प्रायः सभी अंचलों में इण्डिया मार्क–11 हैण्डपम्प लगे हुए हैं । खराब हैण्ड पम्पों की मरम्मत करायी जा रही है तथा अतिरिक्त हैण्ड पम्प भी लगाने जा रहे हैं ।

6–पशुओं को पेयजल उपलब्ध कराने हेतु तहसील सदर, ज्ञानपुर एवं भदोही में कई बड़े तालाबों को पानी से भरवा दिया गया है । माह जुलाई की वर्षा से अधिकांश तालाब स्वतः भर गये हैं ।

7–वर्तमान समय में पशु चारे का संकट नहीं है । संकट की स्थिति से समस्या से निपटने के लिए पर्याप्त व्यवस्था सुलभ है ।

8–पशु बीमारियों की रोकथाम के लिए दो लाख टीके लगवा दिये गये हैं तथा दवायें सभी पशुचिकित्सा केन्द्रों पर सुलभ कराई जा चुकी हैं ।

9–जिन क्षेत्रों में धान की रोपाई सम्भव है वहां सिंचन सोतों का अधिक से अधिक उपयोग करके धान की फसल उगाने की व्यवस्था की गई है । बीज, खाद तथा अन्य वैकल्पिक फसलों की भी व्यवस्था की गई है ।

10–सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर बीमारियों के उपचार के लिए दवाओं की व्यवस्था की गई है ।

11–प्रभावित क्षेत्रों में ग्राम्य विकास अभिकरण की परियोजनाओं के माध्यम से अतिरिक्त रोजगार सुलभ कराने का व्यवस्था की गई है ।

भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री कल्याण सिंह)–

मान्यवर, आज इस माननीय सदन में अपने देश के एक महान नेता के प्रति अपनी शोक श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए खड़ा हुआ हूं ।

देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी का निधन 21 मई, 1991 को तमिलनाडु के पेरुम्बदूर स्थान पर रात्रि के 10.20 पर हो गया । उस समय उनकी आयु 47 वर्ष की थी और गत चुनाव में अपनी पार्टी के चुनाव के संबंध में वह दौरे पर गये हुए थे । श्री राजीव गांधी जी का जन्म 20 अगस्त, 1944 को बम्बई में हुआ था और उन्होंने दून स्कूल में तथा ट्रिनिटी कालेज, कैम्ब्रिज से अपनी शिक्षा प्राप्त की थी । 1981, 84 और 89 में वह लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । उसके बाद स्वर्गीय श्री संजय गांधी की अकाल मृत्यु के बाद उन्होंने एयर लाइन्स की सेवाओं से त्याग-पत्र दे दिया था और अपनी माता स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ वह राजनीति में आये । सन् 1981 में अमेठी से सदस्य निर्वाचित हुए और कांग्रेस के महासचिव भी बने । इसके पश्चात् देश के महान नेता के साथ-साथ कांग्रेस के भी एक प्रकार से वह प्राण ही बन गये थे । यह उनकी संगठन क्षमता और दूरदर्शिता का ही फल था कि पार्टी को काफी शक्ति मिली थी । 31 अक्तूबर, 1984 को जब माननीया श्रीमती इन्दिरा गांधी की निर्मम हत्या हुई तो कुछ ही घण्टों के पश्चात् उनके कन्धों पर भारत जैसे महान देश के प्रधान मंत्री के पद का उत्तरदायित्व आ गया । यह वे क्षण थे जब सामान्यत: व्यक्ति शोक से विह्वल होकर अपनी सुधबुध खो बैठता है परन्तु यह उनके धैर्य, संयम का ही प्रतीक था कि अपनी मां की मृत्यु के दुखद हादसे के कुछ ही घण्टों के बाद वह देश के प्रधान मंत्री बने और देश की बागडोर सम्भाली । वह जब सत्ता पक्ष में रहे तो देश को कुशल नेतृत्व प्रदान किया, विपक्ष में भी रहे तो उन्होंने अपने व्यवहार से अपने आचरण से बहुत ही स्वस्थ लोकतांत्रिक परम्पराओं की स्थापना की । ऐसे व्यक्तित्व कभी-कभी पैदा होते हैं । मैं समझता हूं कि संसार में इतनी कम आयु में विश्व में इतनी ख्याति आर्जित कर लेना हर एक के बस की बात नहीं है । स्वर्गीय श्री राजीव गांधी ने सबसे कम आयु के प्रधान मंत्री के रूप में विश्व भर में एक विशेष प्रकार की ख्याति अर्जित की । उनके उठ जाने से केवल कांग्रेस पार्टी का ही नुकसान या क्षति नहीं हुई है बल्कि देश ने एक महान नेता, दूरदर्शी नेता खो दिया है । देश एक नौजवान देशभक्त की अमूल्य, अनुकरणीय और

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

सराहनीय सेवाओं से वंचित रह गया है । नेहरू परिवार के साथ नियति ने इसमें बड़ी क्रूरता दिखाई । एक ही एक लगातार तीन-तीन हादसे नेहरू परिवार को झेलने पड़े हैं । नेहरू परिवार का देश की आजादी की लड़ाई में विशेष योगदान रहा है । देश के लिए आजादी की लड़ाई में स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अग्रिम भूमिका निभाई थी । स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गांधी की निर्मम हत्या हुई और उसके थोड़े पहले श्री संजय गांधी की दुर्घटना में अकाल मृत्यु हुई थी और अब श्री राजीव गांधी की निर्मम हत्या कर दी गयी । हमारा दल श्री राजीव गांधी की हत्या से शोक विह्वल है । पूरा देश दुखी है और हम सब दुखी हैं ।

हम अपनी ओर से और अपने दल की ओर से स्वर्गीय श्री राजीव गांधी के प्रति बड़े ही सम्मान के साथ अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, और आपसे मैं प्रार्थना करता हूं कि मेरी दल की शोक समवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

नेता विरोधी दल (श्री कैलाश नाथ सिंह यादव)–

मान्यवर, आज हम यहां एक महान विभूति के प्रति अपना शोक प्रकट करने के लिये खड़े हुए हैं जिसके लिये हम यह कहना चाहते हैं कि न पकड़ सके हम हाथ, न थाम सके हम दामन, बड़े फरीब से उठ कर चला गया है कोई । रात को भाषण करना था, मालायें पड़ी, भाषण के लिये आगे बढ़े, इसी वक्त उस महान विभूति को हमसे छीन लिया गया । मैं समझता हूं कि देश में विपत्ति का समय है इसमें उनकी बड़ी आवश्यकता थी ।

श्री राजीव गांधी को मुझे लोक सभा में रह कर पास से देखने का अवसर मिला । हमने उनको बड़े नजदीक से देखा, वह बड़े मृदुभाषी, बड़े शालीन व्यक्तित्व वाले नेता थे । श्री राजीव गांधी का निधन ऐसे समय में हो गया जबकि आज देश के ऊपर आतंकवाद के, अलगाववाद के तथा उग्रवाद के संकटपूर्ण बादल घिरे हुए हैं । आज हमारे देश को श्री राजीव गांधी जैसे साहसिक, राजनैतिक नेता की आवश्यकता थी । देश में साजिश की कार्यवाही के तहत ऐसे नेता की मृत्यु होती है तो इसकी जितनी निन्दा की जाय, वह कम है ।

हमारे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों के प्रधान मंत्रियों की तुलना में भी श्री राजीव गांधी सबसे यंगेस्ट प्रधान मंत्री थे । चालीस साल की उम्र में अपने देश में प्रधान मंत्री बन जाना यह उनकी एक महानतम उपलब्धि थी । इसके बारे में मैं ऐसा समझता हूं जैसा कि हिन्दू शास्त्रों में भी कहा गया है कि शरीर नाशवान है उसकी तो मृत्यु होती है, उसका नाश होता है परन्तु आत्मा जो शरीर के अन्दर वास करती है वह अमर है । गीता में भी कहा गया है कि–

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोपराणि ।
यथा शरीराणि विहाय जीर्णा अन्यानि संयाति नवानिदेही ।।"

इसलिये मैं यह समझता हूं कि मनुष्य का शरीर नाशवान है, उसका बदलाव हो सकता है जैसे कि हम वस्त्रों को बदल लेते हैं उसी तरह से एक शरीर के नष्ट होने पर दूसरे शरीर को धारण कर लेते हैं । इस तरह से हम उन्हीं व्यक्तियों को याद रखते हैं जिसके व्यक्तित्व और कृतित्व से देश का नाम हो। बड़े झंझावतों के बीच में

वह देश की नाव को खेने का काम करते थे । आज देश के ऊपर संकट के बादल खड़े हैं अलगाववाद के, उग्रवाद के, इससे निपटने के लिये नड़ी सूझबूझ के साथ मुकाबला करना है और यह तभी हो सकता है कि जब देश में सब एक होकर इसका मुकाबला करें । उन्होंने संगठन के जरिये देश को मजबूत बनाया और विपक्ष में रह कर जन जागृति का कार्य किया ।

हम अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलित हैं और अपनी श्रद्धांजलि उनको अर्पित करते हैं और आपसे प्रार्थना करते हैं कि उनके शोकाकुल परिवार तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें ।

*श्री प्रगोद कुमार–

मान्यवर, यह मेरे जीवन का दुखत्तम क्षण है जो अपने नेता के लिए संवेदना में कुछ कहना पड़ रहा है । आज इन दुख के क्षणों में आदरणीय सदन में माननीय श्री कल्याण सिंह जी ने और नेता विरोधी दल ने जो विचार प्रकट किए हैं मैं अपने दल की ओर से उनका आभार प्रकट करता हूं और अपने आपको सम्बद्ध भी करता हूं । मान्यवर, महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पितामह मोतीलाल नेहरु, आधुनिक भारत के निर्माता पंडित जवाहर लाल नेहरू, प्रख्यात सांसद फिरोज गांधी तथा शक्ति स्वरूपिणी मां इन्दिरा की कोख से इस रत्न ने जन्म लिया, जो आगे चलकर भारत रत्न के रूप में जाना गया । राजीव गांधी के नाम से पहचाना गया । उसे आदर दिया गया और बेपनाह प्यार दिया गया । उस राजीव गांधी जी के बारे में आज मुझे अपनी संवेदना प्रकट करनी है ।

मान्यवर, जिसके साथ जीवन में बहुत क्षण चाहे वह जय के क्षण हों या पराजय के गुजारे हो, आज वह अपने से अलग रहे, उसके बारे में अपने आप को व्यक्त करना बड़ा मुश्किल हो जाता है । मान्यवर, राजीव गांधी का प्रवेश राजनीति में एक ताकत के साथ हुआ था, एक नये विश्वास के साथ हुआ था, वह एक नई सुगन्ध लेकर और एक नया जोश लेकर आये थे । भारत की राजनीति में उनकी एक नई पहचान बन गई थी । वह एक नया संदेश लेकर आये थे । सच पूछिये तो कालान्तर में वह भारत मां के स्वाभिमान के प्रतीक बन गये थे । मान्यवर, स्व0 श्री राजीव गांधी जी दिन प्रतिदिन जिस रूप में रहे, उसी रूप में वह अविरल गति से चलते रहे, एक नया इतिहास रचते गये और आगे चलकर इस देश की एकता, कौमी एकता, अखण्डता, सच पूछिये तो भारत माता के स्वाभिमान के प्रतीक बनकर जिये और दुनियां ने भी उन्हें इसी रूप में जाना । वह बहुत साहसी थे पर दयालु थे, वह निडर थे पर बहुत मृद व्यवहारी थे । उनमें इन सारे गुणों का अजीब सामंजस्य था जो उनके व्यक्तित्व को आकर्षित बनाता था । मान्यवर, अगर आप उनके जीवन के इतिहास को देखें तो आप देखेंगे कि उनमें मानवता व सहजता कूट-कूट के भरी हुई थी । वह अपनों से व परायों से भी चोट खा लेते थे, परन्तु चोट खाने के बाद उसे वह दिखाते नहीं थे, जिससे कि मानवता की राह पर चलना लोग छोड न दें । यही राजीव गांधी जी का सबसे बड़ा गुण था । यही कारण था कि मानवता के ऊपर कभी राजनीति उनके जीवन में हावी नहीं हो पाई । उनके जीवन में मानवता सर्वोपरि रही है, यही सबसे बड़ा आधार व सिम्बल हमारे दल का है । छोटे-छोटे उदाहरण होते हैं, जो जीवन से अलग होते हैं ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

भारत की संसद को भंग कर चुनाव कराना था । हमारे नेता सदन को याद होगा कि उनके नेता श्री आडवाणी जी की लड़की की शादी थी तो स्व0 श्री राजीव जी ने लोक सभा भंग नहीं की जब उनकी लड़की की शादी हो गई, तब लोक सभा भंग किया । यह एक सहजता होती है माननीय श्री अटल बिहारी जी अस्वस्थ थे, उनके उपचार हेतु अमेरिका भेजना था तो उनकी सारी व्यवस्था स्व0 श्री राजीव जी ने की, परन्तु किसी से कहा नहीं । जब श्री बाजपेयी जी ने शोक श्रद्धांजलि में यह बात कही तब हम लोगों ने जाना । वह चाहते थे कि भारत इक्कीसवीं सदी में बड़े गौरव के साथ प्रवेश करे, विज्ञान तकनीकी के शिखर पर बैठे यहां कोई भूखा न हो, किसी को पीड़ा न हो । वह अपने सारे जीवन में यही प्रयास करते रहे कि धरती पर किसी चीज का अभाव न हो, कोई गरीब न हो, कहीं बेगारी न हो, इसीलिए किसी गरीब के जीवन में अगर उन्होंने आंसू देखे तो वह उसे पोंछने निकल पड़े, चाहे उन्हें उसके लिए कितनी ही परेशानियों का सामना क्यों न करना पड़ा हो ? भारत माता का सिर किसी महाशक्ति के सामने झुकने न पाये इसलिए वह अपनी आवाज बुलन्द करते रहे ।

मान्यवर, उनकी उपलब्धियां तो बहुत हैं, लेकिन उनसे संतोष नहीं है । हमें इस बात का गर्व है कि उनके नेतृत्व में माल द्वीप और श्री लंका में भारत माता के तिरंगे झंडे के नीचे हमारी सेनाओं ने उनकी गुलामी को रोका । जमीन पर वैज्ञानिक और अंतरिक्ष की उपलब्धियों में भारत बड़े-बड़े देशों में सम्मान पूर्वक प्रवेश कर सका । मान्यवर, राजीव जी चाहते थे कि गरीब देशों की आवाज को उठाया जाये और इसी उद्देश्य से उन्होंने दक्षिण पूर्व देशों को एकजुट किया, जिसे सार्क के नाम से जाना जाता है । उनका विश्वास नान-एलाइनमेंट की पालिसी में था और उन्होंने इसको पूरा करने का भरसक प्रयास किया और प्रयत्न किया और इस दिशा में उनके कदम निरन्तर बढ़ते गये । उनका प्रयास सदैव यह रहा कि ऐसे कार्य किये जाये जिससे कमजोर देशों की आवाज सुनाई पड़े ।

मान्यवर, खेलों में भी उनकी रुचि कम नहीं थी । उनमें उनकी विशेष रुचि थी । एशियाड की उपलब्धि उन्हीं की उपलब्धि है । वह चाहते थे कि भारत के खिलाड़ी संसार में अपना नाम कमायें और भारत माता का नाम ऊंचा करें ।

मान्यवर, राजीव जी बड़े साहसी और निडर थे । इसका उदाहरण हमें इससे भी मिलता है कि 31 अक्टूबर 1984 को घर में उनकी माता इंदिरा जी की लाश गोलियों से छलनी की हुई पड़ी थी और देश में अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी, इसलिए वह अपनी मां की लाश को छोड़कर भारत को उस आग से बचाने के लिये निकल पड़े और जब तक देश में अमन चैन नहीं कायम हो गया, भारत माता की एकता के लिये कार्य करते रहे । उन्होंने भारत माता की एकता दल के हितों की भी तिलांजलि दे दी, जिस पर हमें गर्व है । उनके द्वारा पंजाब समझौता और आसाम समझौता किया गया जो राजनैतिक जीवन में दल के उद्देश्य को आगे लाने की एक मिसाल है ।

मान्यवर, राजीव जी का योगदान और नेतृत्व औद्योगिक क्षेत्र में भी कम नहीं रहा है । उन्हीं के नेतृत्व में भारत में अनाज का विशाल भंडार बना और अंतरिक्ष में प्रवेश किया और महान उपलब्धियां प्राप्त की और उन उपलब्धियों के फलस्वरूप ही हमारे देश भारत का नाम दुनियां में आया । यह उन्हीं के नेतृत्व की मिसाल थी । उन्होंने इस देश की कौमी एकता को बनाये रखने के लिये और उसकी रक्षा के लिये बहुत बड़ा योगदान दिया

है वह उस कड़ी में थे जिसमें महात्मा गांधी जी थे और इंदिरा गांधी जी थीं । मां बेटे का बलिदान जो वह देश की एकता और अखंडता के लिए सदैव याद किया जाता रहेगा । उनकी मौत से हम सभी को सबक लेना चाहिए, और कायरों को भी सबक लेना चाहिए उनके जीवन से नयी पीढ़ी के लोगों को और सबक लेना चाहिए । उन्होंने लोकतंत्र की रक्षा के लिये आतंकवाद और अलगाववाद के सामने घुटने नहीं टेके और उसका सामना किया । तो इस तरह का था उनका जीवन और आज हम उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पितकर रहे हैं । मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आप मेरी ओर से, मेरे दल की ओर से और उन तमाम घर वालों की ओर से जिनकी आवाज यहां तक नहीं पहुंच सकती है, की भावनाओं को श्रीमती सोनियां गांधी, उनके पुत्र राहुल और पुत्री प्रियंका तक पहुंचाने की कृपा करें । इन शब्दों के साथ मैं उनका नमन करता हूं, प्रणाम करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

*श्री बेनी प्रसाद वर्मा–

मान्यवर, स्वर्गीय राजीव जी के निधन पर माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और कांग्रेस के नेता ने अपने विचार प्रकट किए, मैं अपने को और अपने दल को उनकी भावनाओं से सम्बद्ध करता हूं । श्रीमन् जो लोग समाज के लिए अविस्मरणीय काम करते हैं, उनके निधन से उनके परिवार वालों को जितना कष्ट होता है, उससे ज्यादा कष्ट समाज को होता है । श्री राजीव गांधी बहुत अल्पायु में देश के प्रधान मंत्री बने और संक्षिप्त 5 साल के कार्यकाल में उन्होंने यह साबित कर दिया कि राजनीति में बड़ा अनुभव न होने के बाद भी यदि किसी व्यक्ति में लगन हो देश प्रेम हो, देश की समस्याओं से जूझने का संकल्प हो तो आप अविस्मरणीय कार्य कर सकते हैं । हम लोग जो विरोधी दलों के हैं आज भी उन्होंने जो पंचायतों को जवाहर रोजगार योजना के जरिये आर्थिक अधिकार दिये हैं, जो हम लोगों की वर्षों से कल्पना थी सराहना करते हैं । उसमें अमल में कुछ दोष हो सकते हैं वह अलग चीज है लेकिन इससे झलकता है कि गांव पंचायतों और ग्रामीणों की जो मजबूरियां थी उनके हल के लिये उनके मन में लगन थी । श्री राजीव गांधी के निधन से धर्म निरपेक्ष शक्तियों को विशेष आघात पहुंचा है । उनके निधन से अंतर्राष्ट्रीय जगत में भी एक क्षति आई और विशेष रूप से उत्तर प्रदेश को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है । आज हमारा वह दबाव केन्द्र पर नहीं है जो सन् 1952 से आज तक केन्द्र में था । हम सब लोग दुखी हैं कि राजीव गांधी का असामयिक निधन कायरतापूर्ण ढंग से हुआ । हम सब लोग जो समाज के कार्यों के लिये आगे आये हैं उनको इससे सबक लेना चाहिए कि प्राणों की परवाह किये बगैर देश में आतंकवादी और अलगाववादी शक्तियों से जूझें या फिर राजनीति से अलग हो जायं । उनके त्याग से हमें सबक मिलता है कि प्राणों की परवाह किये बगैर हम सेवा करें क्योंकि यह शरीर नश्वर है ।

आज राजीव गांधी जी के निधन से सारा राष्ट्र दुखी है कि आतंकवादी शक्तियों द्वारा उनकी कायरतापूर्ण ढंग से हत्या की गयी, यह पूरे समाज के लिए चुनौती है और इन समस्याओं के लिए हम सब को पूरी इच्छा शक्ति से लड़ने का संकल्प लेना होगा तभी यह समस्या खत्म हो सकेगी । श्री राजीव गांधी तीन बार हमारे प्रदेश के अमेठी क्षेत्र से

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

चुने गये और नेता विरोधी दल भी रहे । उनका शालीन व्यक्तित्व और उनकी निजी छवि किसी प्रधान मंत्री से कम नहीं मानी गयी । प्रधान मंत्री बनने के बाद मिस्टर क्लीन कहे जाने लगे उससे पहले भी क्लीन होते होंगे लेकिन बीच में प्रश्न चिन्ह लग गया था । इस लिए जब राजीव गांधी प्रधान मंत्री बने तो विरोधी दल के लोग उनके कार्यों से उनको मिस्टर क्लीन कहते थे । श्री राजीव गांधी अल्पावधि तक ही देश के प्रधान मंत्री रह पाये कम से कम अभी 40 साल आगे तक वह हमारे देश की और समाज की सेवा कर सकते थे । उनके इस असामयिक निर्धन से हम सब को महान दुख है । हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारी ओर से और हमारे दल की ओर से श्री राजीव गांधी के परिवार जनों तक शोक संवेदना भेजने का कष्ट करें ।

श्री राम लखन–

मान्यवर, भूतपूर्व प्रधान मंत्री, स्वर्गीय श्री राजीव गांधी की हत्या के संबंध में जो शोकोद्गार नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता कांग्रेस और नेता समाजवादी जनता पार्टी ने व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, जिस निर्मम ढंग से स्वर्गीय राजीव गांधी की हत्या की गयी उससे पूरे देश को दुख हुआ । मान्यवर, जिस तरह से देश में राजनीतिक हत्यायें बढ़ती जा रही हैं यह चिंता का विषय है । इससे पूरा देश ही नहीं हम देश के करोड़ों-करोड़ों लोग चिंतित हैं । जहां तक मैं सोचता हूं राजनीति में हिंसा के वर्चस्व के लिये हम लोग भी कम दोषी नहीं हैं और अपने व्यक्तिगत एवं दलीय हितों के लिये इसे बढ़ावा देने में हम सब जिम्मेदार हैं । श्रीमन् चाहे पंजाब का आतंकवाद हो, कश्मीर की चाहे समस्या हो अथवा श्रीलंका की तमिल समस्या हो उनकी गहराई से यदि छानबीन की जाय तो मिलेगा कि हम राजनीतिज्ञ लोगों द्वारा समय-समय पर इन्हें संरक्षण और बढ़ावा दिया गया है । श्रीमन्, मेरा मानना है कि ऐसे तत्वों को सख्ती के बल पर नहीं दबाया जा सकता है चूंकि यह भी एक विचार-धारा से जुड़े हुए लोग हैं । यह विचारधारा चाहे देश के लिये कितनी ही घातक क्यों न हो, यही कारण है ऐसे लोग अपने कार्यों को अंजाम देने के लिए अपनी जान की कुरबानी दे रहे हैं । श्रीमन्, जरूरत आज ऐसे लोगों और संगठनों की है जो देश की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये आगे आयें और इसके लिए हम सबको प्रयास करना होगा और राजनीतिक हिंसा को प्रोत्साहन देना बंद करना होगा ।

इन शब्दों के साथ मान्यवर, मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि स्वर्गीय श्री राजीव गांधी की जो हत्या की गयी उसकी निन्दा करते हुए आपसे आग्रह करूंगा कि मेरी ओर से, मेरे दल बहुजन समाज पार्टी की ओर से उक्त शोक संवेदना के उद्गार स्व0 राजीव गांधी के परिवार तक तथा उनकी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं तक आप पहुंचाने की कृपा करेंगे ।

श्री उदल–

मान्यवर, स्वर्गीय श्री राजीव गांधी के संबंध में जो उद्गार नेता सदन, मा0 मुख्य मंत्री जी ने, नेता विरोधी दल, नेता कांग्रेस ने और सजपा के नेता तथा बहुजन समाज पार्टी के नेता ने व्यक्त किया है मैं उससे अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्रीमन्, स्व0 राजीव गांधी की जो हत्या हुई वह आतंकवाद की ही एक कड़ी है और इसके पूर्व उनकी माता स्व0 इंदिरा गांधी की जो हत्या हुई थी वह भी उसी आतंकवाद की एक कड़ी है । आतंकवाद को हम भी रोकने में सफल हुये हैं और यह आतंकवाद सिर्फ हमारे देश में ही रही है बल्कि दुनिया के पैमाने पर बड़ी-बड़ी हस्तियों की हत्यायें कर रहा है । जहां तक स्व0 राजीव गांधी का प्रश्न है, श्रीमन्, मैं भी समझता था कि स्वयं इंदिरा गांधी की हत्या के बाद उन्होंने जब प्रधान मंत्री का पद संभाला तो मैं व्यक्तिगत रुप से कह रहा हूं कि मैं स्वयं नहीं समझ पा रहा था कि इतने बड़े देश का प्रधानमंत्री बन जाने और इस देश की गाड़ी को आगे खींच ले जाने में राजीव गांधी सफल हो सकेंगे । लेकिन श्रीमन् उनके कार्यकलाप ऐसे थे कि उन्होंने इस गाड़ी को चलाया और ठीक से चलाया श्रीमन्, जहां तक उनकी निर्भीकता का सवाल है पं0 कमलापति त्रिपाठी जी का निधन पिछले वर्ष हुआ था, तो मैं उनके घर आखिरी दर्शन करने के लिए और अपने शोकोद्गार प्रकट करने के लिए गया था । मेरे चले आने के बाद मैं ही था, पंडित जी की जब अर्थी उठी तो उस समय राजीव गांधी की निर्भीकता मुझे देखने को मिली, वह देखने लायक थी । वह लाखों आदमियों के बीच सड़क पर जा रहे थे । राजीव गांधी उन लाखों व्यक्तियों के दल में घूम-घूम कर अर्थी के साथ जा रहे थे ।

श्रीमन् जितनी कम उम्र में उन्होंने प्रधानमंत्री का पद सम्हाला, वह दुनिया के इतिहास में एक अलग ही है । क्योंकि इतनी छोटी उम्र का दुनियां का कोई भी प्रधान मंत्री नहीं बना था । हमारे देश की इज्जत उन्होंने विश्व के पैमाने पर ऊंची की, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती । श्रीमन् सबसे बड़ा नुकसान मैं समझता हूं हमारे देश को तो हुआ ही, किन्तु जो संगठित कांग्रेस पार्टी है-आज भी वह सबसे बड़ी पार्टी है, उसकी बहुत बड़ी क्षति हुई है । इस क्षति को, इस पार्टी को बरदास्त करने की क्षमता और मिलेगी और उनकी मृत्यु से सबक लेकर मजबूत होगी तो मैं समझता हूं कि इस देश का बहुत बड़ा कल्याण होगा ।

श्रीमन् मेरे सम्बन्ध उनके पिता श्री फिरोज गांधी से भी थे और दीसयों बार मुझे उनसे मिलने का मौका मिला । वह बहुत ही भले व्यक्ति थे और सादा जीवन और उच्च विचार उनका आदर्श था । सांसद रहते हुए वह जब भी लखनऊ आते थे, तो हम लोग स्थानीय काफी हाउस में मिलकर उनके साथ जरूर बातचीत किया करते थे । वह भी बहुत ही भले थे और बहुत ही विचारवान व्यक्ति थे । उनका भी निधन इस तरह हुआ था । वह भी आगे चलकर और अधिक अच्छी तरह देश और समाज की सेवा कर सकते थे । फिरोज गांधी जी जिस तरह पार्लियामेंट में लड़ते थे, प्रश्नों को उठाते थे, वह जग जाहिर है । श्रीमन् हमारे कहने का मतलब यह है कि आज हमारे देश की यह बहुत बड़ी क्षति हुई है । अब आतंकवाद और अलगाववाद पर कैसे काबू पाया जाए, यह बहुत ही विचारणीय प्रश्न है और इसमें गहराई से जाने की जरूरत पड़ेगी । इसमें अलग-अलग लोगों की राय हो सकती है । मेरी भी भिन्न राय है । यह उसी का नतीजा है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या आतंकवाद के चलते हुई और राजीव गांधी की भी हत्या उसी का परिणाम है । तो यह एक गम्भीर विषय है, इसके ऊपर सभी राजनैतिक दलों की, देश के प्रबुद्ध लोगों को विचार करने की आवश्यकता है, क्योंकि आज हमारा देश आतंकवाद और अलगाववाद का बुरी तरह शिकार है ।

श्रीमन् राजीव गांधी के अन्दर मानवता बहुत भरी थी । जैसा कि अभी हमारे नेता कांग्रेस दल ने कहा, मुझे भी बातें मालूम हैं, यदि कोई दुखी होता, बीमार या परेशान होता या किसी के यहां कोई शादी व्याह आदि होता तो वह उसमें बिना भेदभाव के शिरकत किया करते थे । तो यह मैं समझता हूं कि यह गुण इन्दिरा गांधी में भी थे, क्योंकि वह तो एक मामूली आदमी के यहां शादी में गई थीं, तो मैंने उनकी वह फोटो देखी थी । एक छोटे से परिवार की शादी में शिरकत लेना, यही मानवता का गुण स्वर्गीय राजीव गांधी के अन्दर मैंने देखा । श्रीमन् जब मैंने उनकी हत्या की खबर सुनी तो मुझे बड़ा अफसोस हुआ । मेरा उनसे व्यक्तगत संबंध तो नहीं था लौकिन मानवता का गुण उनके अन्दर था । वह जब तक रहे हमारे देश के हमारे प्रदेश के सम्मान को बढ़ाया । हमारे देश को उन्होंने विश्व के पैमाने पर ऊंचा किया है । ऐसे व्यक्ति के उठ जाने से मैं समझता हूं कि हमारे देश का बहुत बड़ा नुकसान हुआ है । यह क्षति पूरी होने वाली नहीं है ।

श्रीमन्, उन्होंने हमारे ही प्रदेश से तीन बार संसद के लिए चुनाव लड़ा और विजयी हुये । अब की भी उन्होंने चुनाव लड़ा था और श्रीमन् हत्या हो जाने के बाद जो रिजल्ट आया उसमें वह जीत भी गये । ऐसे महान् नेता के उठ जाने से मैं समझता हूं कि हमें ही नहीं हमारे देश को एक अपूर्णनीय क्षति हुई है । मैं आपसे निवेदन करूंगा कि मेरी भावना को, मेरी श्रद्धांजलि को आप उनके परिवार तक पहुंचा दें । मेरा दल भी श्रीमन् शोकाकुल है । श्रीमन् मेरा आपसे निवेदन है कि मेरी श्रद्धांजलि को आप कांग्रेस के जो प्रेसीडेन्ट हैं, प्रधान मंत्री हैं श्री नरसिंहा राव जी तक पहुंचाने का कष्ट करें । धन्यवाद ।

*श्री दीना नाथ सिंह यादव–

मान्यवर, पूर्व प्रधान मंत्री, श्री राजीव गांधी की हत्या ऐसी परिस्थितियों में हुई जब देश के अन्दर विघटनकारी ताकतें सक्रीय हैं । राष्ट्र की एकता, अखण्डता के लिये भारी चुनौती है । राष्ट्र विरोधी शक्तियों की साजिश से विघटनकारी ताकतों ने राजीव गांधी की हत्या की । निसन्देह यह बहुत ही दु:खद घटना थी । हमें राजीव जी की हत्या से जो सबक मिलता है और इसके पहले राजीव जी की माता जी की जो हत्या हुई थी वह भी लगभग इन्हीं परिस्थितियों में हुई थी । उससे भी हमें यह सबक मिलता है कि हमारे देश के अन्दर विघटनकारी ताकतें, राष्ट्र विरोधी ताकतें कितनी सक्रीय हैं । उनकी घुसपैठ कितनी गहराई तक है और निश्चित रूप से आज जब हम श्री राजीव गांधी जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं । हमें आज यह संकल्प लेना चाहिए इस गम्भीरता को समझना चाहिए कि सब एक जुट होकर के इन राष्ट्र विरोधी ताकतों का मुकाबला करें । हम समझते हैं कि यह सबसे बड़ी श्रद्धांजलि उनके प्रति होगी । हमने अपनी आंखों से बनारस की सड़कों पर राजीव गांधी को उन दिनों खुले आम हजारों-हजारों की भीड़ में जब पंडित कमला पति त्रिपाठी की अर्थी जा रही थी देखा है और चर्चा थी बनारस में कि राजीव गांधी कितने निर्भीक हैं । हमने अपनी आंखों से देखा और सुना है । राजीव गांधी जी को अपने युवाकाल में अपने छोटे भाई की असामयिक मृत्यु का सामना करना पड़ा था ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

अपने युवाकाल में अपनी माता की निर्मम हत्या को देखना पड़ा । राजीव गांधी जी निश्चित रूप से कांग्रेस के सर्वमान्य नेता, छात्रनेता और कांग्रेस के प्रेसीडेन्ट थे । इनके निधन से जैसा कि और लोगों ने भी जिक्र किया, कांग्रेस के साथ-साथ पूरे देश की क्षति हुई है इसलिए मैं अपनी तरफ से तथा अपनी पार्टी की तरफ से संवेदना प्रकट करता हूं। और उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी शोक संवेदनायें नरसिंहाराव जी के पास पहुंचाने की कृपा करें जो कांग्रेस पार्टी के प्रेसीडेन्ट हैं । जिनके साथ लाखों-लाख लोग हैं, कांग्रेस के प्रधान मंत्री हैं, इन तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री रामस्वरूप वर्मा–

देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी के आकस्मिक निधन से गहरा दुःख पहुंचा है । वह इतनी बड़ी लोकतंत्र की जीत हासिल करने वाले थे । सद्भाव में रहने वाले थे । मैं ऐसे व्यक्ति के प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूं । मान्यवर, उनके निधन से जो रिक्त हुई है वह अपूर्णनीय है । कांग्रेस दल के लिए तो भविष्य में वह रिक्त भर पाना असम्भव है । इस संबंध में जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दल के नेताओं ने प्रकट किए हैं । उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं और मान्यवर, आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी और हमारी पार्टी के शोक संदेश उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें इन्हीं शब्दों के साथ मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

*श्री पवन कुमार पाण्डेय–

मान्यवर, जैसा कि माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल ने जो शोक संवेदनायें स्वर्गीय राजीव गांधी के प्रति व्यक्त की हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । राजीव गांधी जी की निर्मम हत्या से अपूर्णनीय क्षति हुई है और यह क्षति भविष्य में किसी के द्वारा पूरी नहीं की जा सकती है । हमारी कांग्रेस पार्टी के प्रेसीडेन्ट स्वर्गीय राजीव गांधी जी की हत्या से कांग्रेस को जबर्दस्त झटका लगा है और अपूर्णनीय क्षति हुई है । उनके परिवार को जो झटका लगा है, जो आघात उनके परिवार को पहुंचा है, ईश्वर इसको बर्दाश्त करने की शक्ति उनके परिवार को दे और पार्टी के नेताओं ने जो शोकोद्गार प्रकट किए हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

यदि कोई निर्दलीय माननीय सदस्य कुछ कहना चाहें तो कह सकते हैं ।

*श्री विश्वेन्द्र कुमार–

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, नेता कांग्रेस पार्टी, नेता कम्युनिस्ट पार्टी, नेता बहुजन समाज पार्टी, नेता भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने जो अपनी शोक संवेदना में कहा है उससे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । मैं माननीय सदस्यों से यह कहना चाहता हूं कि स्वर्गीय राजीव गांधी की हत्या इसलिए की गयी कि आने वाले समय में जो भी नेता दृढ़ता पूर्वक, बिना डरे, बिना झिझके जनप्रतिनिधित्व करेगा उसकी हत्या कर दी जायगी । इसीलिए नेताओं के मनोबल को डाउन करने के लिये,

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

नेताओं का हृदय कम्पन करने के लिये, आतंकवादियों, उग्रवादियों ने स्वर्गीय राजीव गांधी की हत्या कर दी । उनका अमूल्य जीवन जो इस देश के लिए आवश्यक था उसको छीन लिया । मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करता हूं कि इस प्रकार के हादसे पर सच्ची श्रद्धांजलि यह होगी कि जनप्रतिनिधियों का मनोबल इस प्रकार के हादसों से कम्पित न हो । मैं अन्य माननीय नेताओं ने स्व0 राजीव गांधी के प्रति जो विचार प्रकट किये हैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं और दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जनता दल, बहुजन समाज पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्स0), शोषित समाज दल, शिवसेना आदि के माननीय नेताओं ने दिवंगत नेता स्वर्गीय राजीव गांधी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जो शब्द कहे हैं मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं। 21 मई, 1991 की रात न केवल इस देश के लिये बल्कि समूचे विश्व के राजनीति जगत को कम्पित करने वाली रात्रि थी । विश्राम के क्षणों में कोई भी प्रहर इतना अंधेरा और इतना काला हो सकता है इसकी लोगों ने सहज कल्पना न की होगी । जब यह समाचार मिला कि एक विस्फोट से इस देश के एक राजनीतिक प्रहरी का शरीर छिन्न-भिन्न हो गया तो स्वाभाविक है कि करोड़ों की आस्थाओं पर कुठाराघात हुआ । विलाप और रूदन के स्वर सारे देश में सुनायी पड़ने लगे और राजनीतिक चिंतकों को झकझोर सा दिया गया कि अगर इस देश के लोकतंत्र की रक्षा करना है, विश्व से आतंकवाद समाप्त करना है तो कोई कठोर और सार्थक उपाय करने होंगे । स्व0 श्री राजीव गांधी देश के प्रमुखतम राजनीतिक परिवार में जन्में, उन्हें राजनीतिक महत्वाकांक्षा प्रारम्भ में नहीं । लेकिन परिस्थितियां उन्हें राजनीति में खींच कर ले आयीं । जिस प्रकार से अल्पकाल में इस देश के जनमानस में, राजनीतिक नेता के रूप में श्री राजीव गांधी ने एक स्थान बनाया वह बहुतों के लिये अनुकरणीय और अनेकों के लिये ईर्ष्या का विषय है । "सार्क" के अध्यक्ष के रूप में विश्व शांति के लिये जो उन्होंने प्रयास किए उनकी समूचे विश्व में सराहना की गयी । मात्र 46 वर्ष की आयु, कोई मृत्यु का आलिंगन करने के लिये नहीं होती । यह आयु होती है अपने सपनों को साकार देखने तथा सुखद अनुभव के आधार पर जीवन जीने की । श्री राजीव गांधी जी जितने दिन जियें जीवंत जिये, सक्रिय राजनीतिक और सार्थक जीवन जिये । उनकी मृत्यु से जो हानि हुयी है वह पूरी नहीं हो सकेगी । ऐसा हम सबका विश्वास है । मुझे भी श्री राजीव गांधी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था और उस दिन जो उनकी छवि बनी थी, उन्होंने जो छाप मेरे उपर छोड़ी थी, वह एक सरल, मृदुभाषी, सौम्य शिष्ट व्यक्ति की तस्वीर थी । उन्हें कितनी भी श्रद्धांजलि दी जाए, सारी छोटी पड़ जायेंगी । उस व्यक्तित्व पर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं, लिखी भी जा रही हैं । मैं उस साहसी व्यक्ति को नमन कर, आप सबकी शोक संवेदनाओं से अपने को सम्बद्ध करते हुए अपनी और सारे सदन की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । आपकी भावनाओं से मैं उनके परिवार को अवगत करा दूंगा । आइये हम सब दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट मौन खड़े होकर श्रद्धांजलि अर्पित करें ।

(सभी सदस्यों ने सदन में दो मिनट मौन खड़े होकर श्रद्धांजलि अर्पित की)

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के वयोवृद्ध नेता श्री श्रीपाद अमृत डांगे के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री कल्याण सिंह)–

मान्यवर, आप अपने बीच से साम्यवादी आन्दोलन के बहुत ही प्रमुख व्यक्ति माननीय श्री श्रीपाद अमृत डांगे बीच से उठ गये। उनके उठ जाने से हमें बहुत दु:ख है । मान्यवर, श्री डांगे जी का जन्म अक्टूबर, 1899 में महाराष्ट्र के नासिक स्थान पर हुआ था । उन्होंने विल्सन कालेज, बम्बई में शिक्षा प्राप्त की थी । इसके पश्चात् वे राजनीति के क्षेत्र में, सार्वजनिक क्षेत्र में आ गये । वे 1946 में बम्बई विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और उसके पश्चात् 1957 में लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । श्री डांगे जी स्वतंत्रता संग्राम के एक जुझारू व्यक्ति रहे । उन्होंने देश की आजादी के लिए संघर्ष किया। अनेक बार जेल यात्राएं कीं और साम्यवादी आन्दोलन में उनकी अहम भूमिका रही है, नेतृत्व प्रदान किया है। वे इस देश के गरीबों के, श्रमिकों के हितों के लिए सदैव संघर्षशील रहे। उनके उठ जाने से श्रमिक वर्ग का, गरीबों का अपना एक मसीहा खो दिया है। भारतवर्ष ने भी एक महान देश भक्त खो दिया है, भारतवर्ष ने एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी खो दिया है, ऐसे व्यक्तित्व की पूर्ति बहुत कठिन होती है । श्री डांगे उस पीढ़ी के थे, जिस पीढ़ी के सार्वजनिक जीवन में सदैव नैतिक मूल्यों पर जोर दिया जाता रहा है । आज अपने देश के सार्वजनिक जीवन में जो नैतिक मूल्यों का धीरे-धीरे ह्रास हो रहा है, यह वास्तव में बड़ी गहरी चिन्ता का विषय है, लोकतंत्र के लिए घातक है। श्री डांगे की जीवन के, व्यवहार के, नैतिक मूल्यों के प्रति उनकी जो आस्था थी हम सभी के लिए सदैव प्रेरणा दायी रहेगी । श्री डांगे के उठ जाने के बाद एक शून्य पैदा हो गया है । उनके उठ जाने के बाद मजदूर वर्ग ने, उनके हितों की लड़ाई लड़ने वाला सेनानी खो दिया है। श्री डांगे की मृत्यु से हम सभी बहुत दुखी हैं। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति बड़े सम्मान के साथ श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी, मेरे दल की शोक-संवेदना उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

नेता विरोधी दल (श्री कैलाशनाथ सिंह यादव)–

मान्यवर, स्वर्गीय श्रीपाद अमृत डांगे साम्यवादी आन्दोलनों के संस्थापकों में से एक थे । पूरा जीवन उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में इस देश को आजाद कराने में लगाया । श्री डांगे हमेशा दलितों के उद्धार के लिए काम करते रहे, वह श्रमिकों के आन्दोलनों से जुड़े थे और उन्होंने अपनी एक लम्बी आयु पूरी कर इस देश के आत्म बल और नैतिक बल को प्रस्थापित करने का काम किया ।। बम्बई विधान सभा के सदस्य के रूप में या लोक सभा के सदस्य के रूप में भी उनका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा । 1899 यानि 19वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध जब वह जन्मे तब देश की ऐसी परिस्थिति थी कि गरीब सर्वहारा वर्ग के लोग सताये जा रहे थे, उस समय इन्होंने सर्वहारा वर्ग के के लोगों को संरक्षण देने का काम किया । उनका यह सिद्धान्त था, कर्म ही पूजा है,

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

वर्क इज वर्शिप और इस सिद्धान्त के आधार पर उन्होंने समाज के गरीब तबके के लोगों, मजदूरों और जो अपनी कमाई करके दो जून की रोटी मोहइया नहीं कर पाते थे, उनकी लड़ाई लेने का काम उन्होंने किया, उनकी समस्याओं को उन्होंने रखा और साम्यवादी आन्दोलन को सक्रिय रूप से बढ़ाया ।। मजदूर आन्दोलनों में वह विशेष रूप से जुड़े रहे ।।

श्री डांगे ने इस देश के लिए वह काम किया, जिसके लिए कोई व्यक्ति समाज और देश की लड़ाई लड़ने का काम करता है । मैं ऐसे महापुरुष, जिन्होंने लम्बी जिन्दगी जी लिया, लेकिन उनका मकसद यह रहा कि वह देश के अन्दर न केवल विदेशियों के शासन से मुक्ति दिलायें, बल्कि जो गरीब और बेसहारा लोग हैं, उनके सुख और दुःख की भागीदारी करें। मैं ऐसे महापुरुष के प्रति अपने और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और यह आशा करता हूं कि ऐसे महापुरुष जिसके जीवन से हमें प्रेरणा मिलती रहती है और आगे भी उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रेरणा मिलती रहेगी । आपसे प्रार्थना है कि हमारी भावनाओं को उनके परिवार और पार्टी तक पहुंचाने का कष्ट करें ।।

*श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, श्री श्रीपाद अमृत डांगे के निधन के साथ साम्यवादी आन्दोलन भी जुड़ा हुआ है । उनके हमारे बीच से उठ जाने से एक रोशनी बुझ गयी ।। मान्यवर, उनके निधन पर जो विचार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल में व्यक्त किये हैं, मैं अपने तथा अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं और यह कहना चाहता हूं कि उनके निधन से हमने एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और धर्म निरपेक्षता का अलम्बदार खो दिया है । उनके जीवन में प्रमुख घटना यह थी, कितने बड़े राष्ट्रीयता के पोषक थे, राष्ट्रीयता वादी थे इसकी मिसाल इसी से मिलती है कि जब 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया था तो वे पहले नेता थे जिन्होंने पुरजोर शब्दों में चीन को हमलावर कहा था । यह राष्ट्रीयता के लिए समर्पित है ।। समाजवादी आन्दोलन में वह पहले ऐसे बड़े नेता थे जिन्होंने राष्ट्रीयता की पहचान बनायी, राष्ट्रीयता के लिए आवाज उठायी । मान्यवर, हमारे दल के साथ उनके निकट के संबंध भी रहे हैं । जब कभी धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई, समाजवाद की लड़ाई लड़ी गयी तो पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के साथ, आदरणीय इन्दिरा जी के साथ और राजीव जी के साथ वह लगातार चलते रहे । इस दुखद घड़ी में मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से भारत के ऐसे महान सपूत को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।। यह जो हमारे दल की संवेदना है, मुझे पूरा विश्वास है कि उनकी पुत्री और उनके परिवारजन को यह संदेश आप स्वयं पहुंचा देंगे ।

*श्री बेनी प्रसाद वर्मा–

मान्यवर, स्वर्गीय श्रीपाद अमृत डांगे के संबंध में जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने व्यक्त किये हैं मैं अपने को और अपनी दल को उन भावनाओं से सम्बद्ध करता हूं । महान् स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्य श्री डांगे साहब के

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

निधन से समाजवादी आन्दोलन में एक अपूर्णनीय क्षति आई है । वैसे श्री डांगे साहब 92 वर्ष की आयु से अधिक इस देश की सेवा में रहे । पूरी आयु करीब-करीब उन्होंने जी ली । फिर भी ऐसे महान लोगों के निधन से कष्ट तो होता ही है । उनका जो गरीबों के प्रति विचार था, श्रमिकों के प्रति विचार था और जो उन्होंने छाप छोड़ी है, देश की राजनीति पर, उससे प्रेरणा लें, यही उनके प्रति उनकी आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी । आपसे प्रार्थना है कि हमारे विचारों को उनके परिवार तक भेजने की कृपा करें ।

*श्री राम लखन–

मान्यवर, वरिष्ठ कम्युनिष्ट नेता श्रीपाद अमृत डांगे के निधन के शोक पर जो विचार नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, नेता जनता दल ने व्यक्त किये हैं, मैं भी अपने को और अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, स्वर्गीय डांगे साहब एक जुझारू, कर्मठ और निर्भीक नेता थे, इसमें कोई दो राय नहीं है । श्रीमन्, आपने जीवन काल में उन्होंने अपने संघर्ष की बदौलत श्रमिकों का मसीहा कहे जाने के लिए लोगों को मजबूर किया । श्रीमन् आज हमारे बीच में स्वर्गीय श्री डांगे साहब मौजूद नहीं हैं लेकिन उनका साहस, उनकी कर्मठता, उनकी निर्भीकता आज विद्यमान है । श्रीमन्, मैं अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से आग्रह करूंगा और निवेदन करूंगा कि उनके परिवार को उनकी पार्टी के वरिष्ठजनों तक हमारी शोक संवेदना भेजने की कृपा करें ।

श्री ऊदल–

अध्यक्ष, श्रीपाद अमृत डांगे जी के निधन के संबंध में जो विचार माननीय मुख्य मंत्री जी ने और अपने दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं, उससे मैं– अपने को तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । श्रीमन्, डांगे साहब कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक थे ही उसके अलावा स्वतंत्रता संग्राम में जो उनकी भूमिका रही श्रीमन् वह बहुत ही सराहनीय रही है, बहुत बार उनको जेल जाना पड़ा । श्रीमन्, इतना ही नहीं श्री डांगे जी ने तिलक जी के साथ भी काम किया है जब तिलक जी ने यह नारा दिया था कि स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है । और, इसके साथ ही साथ बहुत बड़े लेखक और बहुत बड़े विद्वान श्रीमन् डांगे साहब थे । बहुत सी किताबों की रचना उन्होंने की है । श्रीमन् यह विश्व मजदूर आन्दोलन के बीस वर्षों तक उपाध्यक्ष रहे हैं। आज वे हमारे बीच नहीं हैं ।

महाराष्ट्र विधान सभा में, जब संयुक्त महाराष्ट्र था, वहां यह सदस्य निर्वाचित हुए थे । वहां एक मसला ऐसा आ गया था जिसमें कि रात भर बहस होती रही और पूरी सरकार सो रही थी जब उन्होंने अध्यक्ष जी को कहा कि मान्यवर घंटी बजवाइये सरकार सो रही है हम अपनी बात किस को सुनायें । ऐसे बहुत से उनके उदाहरण हैं । उनके बड़े उच्च विचार थे और वे बड़े प्रखर वक्ता थे, मजदूरों के मसीहा थे । लोक सभा के भी वे सदस्य रहे और लोक सभा में हमारे दल के नेता भी थे । सन् 1942 में नासिक आंदोलन और अन्य मजदूर आंदोलन की उन्होंने रहनुमाई की । ऐसे व्यक्तित्व के उठ जाने से हमारी क्षति हुई है और क्षति पूरी नहीं हो सकती है । उन्होंने 92

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

वर्ष की आयु पूर्ण की थी। श्रीमन्, मेरा सम्बन्ध डांगे साहब से बचपन में ही हो गया था। उनके परिवार में मुझे बीसों बार जाने का मौका मिला और पार्टी के अंदर रहकर काम करने का मौका भी मुझे मिला उनकी रहनुमाई में। मैं समझता हूं कि ऐसा निर्भीक व्यक्तित्व ऐसा विचारक मैंने अपने यहां किसी को नहीं पाया। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से मतभेद हो जाने पर उन्होंने अलग से अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।

मान्यवर, डांगे साहब जैसा व्यक्तित्व, निर्भीक व्यक्तित्व मैंने देखा नहीं। उनके उठ जाने से एक विचारवान नेता उठ गया तथा निर्भीक व्यक्ति उठ गया और साम्यवादी आंदोलन को इससे कुछ क्षति ही पहुंची है। उनके पास लड़के नहीं हैं। उनकी लड़की रोजा देश पांडेय हैं, वह भी पार्लियामेंट की सदस्य थी, वे मौजूद हैं श्रीमन् मैं चाहता हूं कि हमारी संवेदनाओं को, हमारे शोक को, हमारी श्रद्धांजलि को उन तक पहुंचा दें। रोजा देश पाण्डेय, परेल बाम्बे में रहती हैं और उन्होंने जो नई पार्टी गठित की है उनके महामंत्री मोहित सेन हैं, वे दिल्ली में रहते हैं। मैं आपसे आग्रह करूंगा कि उनकी नई पार्टी के जो महासचिव मोहिता सेन जी हैं उनको भी हमारी शोक संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री दीनानाथ सिंह यादव–

मान्यवर, श्री श्रीपाद अमृत डांगे हिन्दुस्तान के संस्थापकों में से एक थे। उन्होंने अपने संघर्षों से, अपने त्याग और बलिदान से जो मजदूर वर्ग के लिए संघर्ष किया, आन्दोलन किया उससे न केवल हिन्दुस्तान बल्कि विश्व के मजदूर वर्ग के नेता बन गये। उनका सारा जीवन, लगभग 60, 65 साल का जीवन मजदूर वर्ग की सेवा में, देश सेवा में और कम्युनिष्ट आन्दोलन को आगे बढ़ाने में बीता। निश्चित रूप से ऐसी महान विभूति के निधन से मजदूर वर्ग की व देश की महान क्षति हुई है। हम उनके निधन पर अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से शोक संवेदना प्रकट करते हैं और आपसे आग्रह करते हैं कि उनके परिवार तक तथा उनकी पार्टी तक हमारी शोक संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री राम स्वरूप वर्मा–

मान्यवर, कृशकायी श्री श्रीपाद अमृत डांगे का 92 वर्ष के बाद निधन हो गया है जिसका हमें बहुत दुख है। वह मार्क्सवाद के प्रख्यात भाषाकार थे और उन्होंने मार्क्सवाद को आगे बढ़ाया। जो विचार और शोकोद्गार इस संबंध में नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य नेताओं ने व्यक्त किये हैं मैं उससे अपने को व अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री पवन कुमार पांडे–

श्रीमन् माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, नेता भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी नेता जनता पार्टी तथा अन्य नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन् श्री डांगे जी ने जीवन पर्यन्त गरीबों की सेवा की और अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया। उनकी सही श्रद्धांजलि यही होगी कि हम गरीबों के कल्याण एवं

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

सम्प्रदायवाद के विरोध में एक जुट होकर के संघर्ष करें। श्रीमन् मेरी ओर से व मेरे दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार को शोक संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें ।

*श्री झाऊ लाल यादव–

मान्यवर, मैं दिवंगत नेता माननीय श्री श्रीपाद अमृत डांगे साहब को श्रृद्धांजलि अर्पित करने के लिए खड़ा हुआ हूं । मान्यवर, माननीय मुख्य मंत्री जी, नेता विरोधी दल तथा अन्य सभी दलों के सम्मानित नेतागणों ने जो दिवंगत नेता श्री डांगे साहब को शोक श्रृद्धांजलि अर्पित की है, मैं उससे अपने को और अपने सभी निर्दलीय विधायकों की तरफ से सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार-जनों तक हमारी संवेदनाएं पहुचाने का कष्ट करें ।

श्री अध्यक्ष–

बीसवीं सदी के प्रादुर्भाव में जन्म लेने वाले प्रसिद्ध साम्यवादी नेता श्री डांगे का 22 मई, 1991 को 92 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया । श्री डांगे सर्वप्रथम 1946 में बम्बई विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे और उसके बाद 1957 में लोक सभा के लिए चुने गए । संसद में साम्यवादी दल के नेता के रूप में भी वह रहे । श्री डांगे ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया, जिसके फलस्वरूप उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा । वह साम्यवादी आन्दोलन को आगे बढ़ाने में अग्रणी नेता थे । देश के मजदूर आन्दोलनों से श्री डांगे विशेष रूप से जुड़े रहे । भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से मतभेद हो जाने पर उन्होंने अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की ।

श्री डांगे का श्रमिक क्षेत्र में एक प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में उस समय प्रादुर्भाव हुआ, जब देश साम्राज्यवादियों के शिकंजे में जकड़ा हुआ था और शोषण के खिलाफ आवाज उठाना तो दूर, कोई कराह भी नहीं सकता था । ऐसे समय साम्यवाद की नई विचारधारा के संबंध में लोगों में तमाम भ्रान्तियां थीं और लोगों को इसे समझने में कठिनाई आ रही थी । उस समय साम्यवाद के सिद्धांतों और उसकी नीतियों का स्पष्ट प्रतिपादन करने के लिए, श्रमिकों की आवाज को उठाने के लिए, जब श्री डांगे सार्वजनिक क्षेत्र में आगे आयें तो उनका काफी स्वागत हुआ । अपने राजनीतिक जीवन में विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भागीदारी लेकर श्री डांगे ने इस देश के श्रमिक वर्ग और राजनीतिक वर्ग में जो चेतना जगाने का कार्य किया, वह अविस्मरणीय है । मैं अपनी ओर से, इस सदन की ओर से और आप सबकी भावनाओं से अपने को संबद्ध करते हुए उन्हें श्रृद्धांजलि देता हूं और आप सभी से अनुरोध है कि उनकी स्मृति में दो मिनट का मौन रखें ।

(सम्पूर्ण सदन ने दो मिनट का मौन रखा)

श्री अध्यक्ष–

इस सदन में श्री डांगे के निधन के संबंध में जो भावनायें व्यक्त की गई हैं, वह उनकी पुत्री श्रीमती रोजा देश पान्डे तथा उनकी पार्टी के अध्यक्ष को पहुचा दी जायेंगी ।

भूतपूर्व मा0 सदस्यगण सर्वश्री रतन स्वरूप, राम लक्षण तिवारी, विजय बहादुर सिंह, राजेन्द्र सिंह यादव, भगौती प्रसाद सिंह, वासुदेव दीक्षित, गौरी शंकर राय, महादेव, मुख्तार अहमद किदवई, श्रीनाथ सिंह, तथा श्री ज्ञानाथ सिंह के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री कल्याण सिंह)–

मान्यवर, इस माननीय सदन के भूतपूर्व माननीय सदस्यगण सर्वश्री रतन स्वरूप जी, बुलन्दशहर, श्री रामलक्षण तिवारी, बलिया, श्री विजय बहादुर सिंह, मिर्जापुर, श्री राजेन्द्र सिंह यादव, फरुर्खाबाद, श्री भगौती प्रसाद सिंह, फैजाबाद, श्री वासुदेव जी दीक्षित, फतेहपुर, श्री गौरी शंकर राय, बलिया, श्री महादेव, फैजाबाद, श्री मुख्तार महमद किदवई, फैजाबाद, अपने बीच में नहीं रहे, उनके निधन से हम सभी बहुत दुखी हैं । इन दिवंगत आत्माओं में से श्री रतन स्वरूप जी का निधन 22 दिसम्बर, 1990 को हुआ । आयु भी उनकी कोई अधिक न थी, केवल 51 वर्ष के वे थे । उनका जन्म बुलन्दशहर में 11 मई, 1939 को हुआ था । सन् 1985 के सामान्य निर्वाचन में निर्वाचन क्षेत्र जेदर सुरक्षित सीट से कांग्रेस के टिकट पर वे इस सम्मानित सदन के सदस्य निर्वाचित हुए । वर्ष 1964 से 1980 तक वह नगर सफाई मजदूर संघ, सिकन्दराबाद के महासचिव रहे । सन् 1977 से 1985 तक जिला कांग्रेस कमेटी, सिकन्दराबाद के संयुक्त सचिव तथा नगर कांग्रेस कमेटी, सिकन्दराबाद के महासचिव के पदों पर रहे ।

अपने जनपद के नेता थे । गरीबों के साथ वह जुड़े रहे और उनके हितों के लिए लड़ते रहे । आज उनके निधन से जनपद बुलन्दशहर ने एक कुशल राजनीतिक खो दिया है । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से संवेदना के ये भाव उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

मान्यवर, श्री राम लक्षण तिवारी जी का निधन 13/14 फरवरी, 1991 की रात्रि में हो गया । वह 81 वर्ष के थे । उनका जन्म 28 अगस्त, 1910 को जनपद बलिया में हुआ था । उन्होंने शास्त्री की उपाधि प्राप्त की थी । 1957 के सामान्य निर्वाचन में जनपद बलिया से वह कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में चुनकर इस सदन में आये थे । उन्होंने 1930 के सत्याग्रह आन्दोलन में भी भाग लिया । उन्होंने देश की आजादी की लड़ाई में भी विशेष योगदान दिया । आज वह हमारे बीच नहीं है, हम सब इससे दुखी हैं । उनके उठ जाने से जनपद बलिया ने एक कुशल राजनेता तथा एक समाजवादी विचारधारा का व्यक्ति खो दिया है । मान्यवर, हमारा आपसे निवेदन है कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से संवेदना के ये भाव उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री विजय बहादुर सिंह जी का निधन 17 फरवरी, 1991 को हो गया । वे लगभग 63 वर्ष के थे । इनका जन्म 1928 में हुआ । इन्होंने एम0 ए0, एल0 एल0 बी0 तक की शिक्षा ग्रहण की थी । 1969 के सामान्य निर्वाचन में मिर्जापुर से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में चुनकर आये थे । सदैव छात्र जीवन से उन्होंने सक्रिय आन्दोलनों में भाग लिया था । उनके उठ जाने से मिर्जापुर जनपद ने एक सच्चा समाज सेवी खो दिया है मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति बड़े सम्मान के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरे दल के ये संवेदना के भाव उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री राजेन्द्र सिंह यादव जी का जन्म 1915 में फर्रुखाबाद में हुआ था। इनका निधन 28 मार्च, 1991 को हो गया । वह पहली बार 1957 में चुनकर इस सदन में आये थे ।। उसके पश्चात् वह 1962, 67 74, 77 और 1980 में चुनकर आये । जो आदमी इतनी बार लगातार चुनकर इस सदन का सदस्य बना हो तो यह इस बात का प्रमाण है कि वह अपने जनपद में और अपने क्षेत्र में कितने अधिक लोकप्रिय थे । एक बार चुनने के बाद अनेक लोग दुबारा चुनकर नहीं आ पाते हैं । उन्होंने हमेशा गरीबों के हितों की लड़ाई लड़ी, वह शासन में उत्तर दायित्वपूर्ण पदों पर भी रहे और बहुत ही कुशलता के साथ उन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन किया उनके उठ जाने से हम सभी दुखी हैं । उनके निधन से जनपद फर्रुखाबाद ने एक अनुभवी समाजसेवी और एक योग्य राजनेता खो दिया है । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से शोक संवेदना के ये भाव उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें । श्रीमन् श्री भगवती प्रसाद सिंह जी का निधन 11 अप्रैल, 1991 को हो गया है । वह भी 65 वर्ष के ही थे । इनका जन्म वर्ष 1926 में जिला फैजाबाद में हुआ था । उन्होंने 1974 का चुनाव जीतकर इस सदन की सदस्यता ग्रहण की थी । 1977 में दुबारा भी वह इस सम्मानित सदन के सदस्य बने । कांग्रेस, सोशलिस्ट पार्टी विचारधारा में उनकी आस्था रही । उन्होंने सदैव गरीबों के लिए संघर्ष किया और अपने जनपद की सेवा मे अग्रणी रहे । उनके उठ जाने पर जनपद फैजाबाद ने एक कुशल राजनेता खो दिया है । अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से मैं बड़े सम्मान के साथ उनके प्रति संवेदनायें प्रकट करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरे और मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री वासुदेव दीक्षित का निधन 24 अप्रैल, 1991 को हो गया है । उनकी आयु 83 वर्ष की थी । उनका जन्म जनपद फतेहपुर में वर्ष 1908 में हुआ था । 1957 के निर्वाचन में वह इस सम्मानित सदन के सदस्य बने । उसके पहले भी उन्होंने कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में और एक नेता के रूप में जहां संगठन की सेवा की वहीं पर जनता की भी सेवा की । उनके उठ जाने के बाद जनपद फतेहपुर में राजनीतिक रिक्तता पैदा हुई है और जनपद फतेहपुर ने एक अच्छा राजनेता खो दिया है । मैं अपने दल और अपनी तरफ से उनके प्रति शोक संवेदनायें व्यक्त करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोकाकुल परिवार तक मेरी और मेरे दल की शोक संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री गौरी शंकर राय जी का निधन 2/3 मई, 1991 की रात्रि को हो गया । उनकी आयु 67 वर्ष की थी । इनका जन्म वर्ष 1924 में बलिया में हुआ था । इन्होंने साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त की थी । वर्ष 1957 के सामान्य निर्वाचन में वह बलिया से इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए । वर्ष 1970 में वह उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य निर्वाचित हुए और फिर 1977 में लोकसभा के सदस्य बने । मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है उनको निकट से देखने का, उनके सान्निध्य का । श्री गौरी शंकर राय अपनी विचार-धारा के थे और बहुत साहसी और बहुत निर्भीक थे । मन में आयी बात को रोक नहीं पाते थे । कोई भी उनकी बात से असहमत तो हो सकता था लेकिन निर्भीकता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था । उन्होंने सार्वजनिक जीवन में सदैव नैतिक मूल्यों की स्थापना

की । वह उस पीढ़ी के महान व्यक्ति थे जो सार्वजनिक जीवन में स्वच्छता पर जोर देते हैं, नैतिक मूल्यों की चिन्ता करते हैं । उनके उठ जाने से केवल बलिया जनपद की ही क्षति नहीं हुई है बल्कि उनके उठ जाने से पूरे प्रदेश ने एक अच्छा, निर्भीक और निष्पक्ष राजनेता खो दिया है । उनके उठ जाने से हम दुखी हैं और इस दुखद अवसर पर अपने दल की ओर से सम्मान के साथ उनके प्रति अपनी संवेदनायें अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरे और मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्रीमन् श्री महादेव जी भी हमारे बीच में नहीं रहे । इनका निधन 11 मई, 1991 को हो गया । वे लगभग 85 वर्ष के थे ।

श्री महादेव का जन्म सन् 1906 में जनपद फैजाबाद में हुआ था । इन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण की थी । श्री महादेव 1962 के सामान्य निर्वाचन में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गये थे, फिर 1974 में राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । वे उत्तर प्रदेश लोकदल के अध्यक्ष पद पर भी रहे । बहुत ही चिन्तनशील और प्रखर प्रतिभा के वे व्यक्ति थे । विशेष रूप से पिछड़ों, दलितों के लिए उन्होंने लड़ाई लड़ी । आज उनके उठ जाने से गरीब दलित, पिछड़ा वर्ग ऐसा महसूस करता है कि उसने अपना एक हमदर्द खो दिया है । उनके उठ जाने से पूरे प्रदेश की क्षति हुई है ।

मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी सम्वेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुं-चाने का कष्ट करें ।

माननीय, श्री मुख्तार अहमद किदवई भी हमारे बीच में नहीं रहे, हम बहुत दुखी हैं । श्री मुख्तार अहमद किदवई का निधन 23 मई, 1991 की रात्रि में हो गया । वे लगभग 81 वर्ष के थे ।

श्री मुख्तार अहमद किदवई का जन्म 1910 में टाण्डा में हुआ था । सर्वप्रथम ये 1950 के उप निर्वाचन में फैजाबाद से उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए । इसके बाद 1962 से 1966 तक श्री किदवई विधान परिषद् के भी सदस्य रहे ।

श्री मुख्तार अहमद किदवई उर्दू, अरबी, फारसी, हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे । 1936 में वे जिले के प्रसिद्ध कार्यकर्ता मौलाना मौलवी नसीर की प्रेरणा से कांग्रेस के सदस्य बने तथा मशहूर समाजवादी नेता आचार्य नरेन्द्र देव के सम्पर्क में आये । 1948 में वे कांग्रेस (प्रान्तीय) कमेटी के सदस्य चुने गये । 9 अगस्त, 1942 को "भारत छोड़ो" आन्दोलन में भाग लिया और जेल गये । स्वर्गीय किदवई आजादी की लड़ाई के सैनिक थे और बहुत ही योग्य, कुशल, कई भाषाओं का विद्वान आज हमारे बीच से उठ गया है इससे पूरे प्रदेश को भारी क्षति हुई है । मैं इस दुखद प्रसंग पर अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी श्र[illegible] कुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्रीमन्, श्री श्रीनाथ सिंह हमारे बीच से उठ गये हैं । इनका निधन 6 जून, 1991 को हो गया । वे लगभग 58 वर्ष के थे । इनका जन्म सन् 1933 में वाराणसी में हुआ था । सर्वप्रथम ये सन् 1980 में चिरईं गांव, वाराणसी से निर्वाचित हुए थे उसके बाद 1985 में पुनः निर्वाचित हुए ।

श्री सिंह 1984-85 तक विधान सभा की सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम समिति के सदस्य रहे । मुझे भी उनके साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । मैं भी इस समिति का सदस्य रहा हूं, कितने सुलझे हुए विचार उन्होंने प्रकट किये हैं समिति के माध्यम से जिससे पूरे प्रदेश की सेवा हुई । आज उनके उठ जाने से हमें बहुत दुख है । एक रिक्तता पैदा हो गयी है । मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोकाकुल परिवार तक हमारी शोक सम्वेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्रीमन्, श्री शौनाथ सिंह जी भी हमारे बीच से उठ गये हैं । इनका निधन 21 जून, 1991 को हो गया । इनका जन्म सन् 1924 में बिजनौर में हुआ था । 1969 के मध्यावधि चुनाव में श्री सिंह सर्वप्रथम विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । फिर 1980 तथा 1985 के सामान्य निर्वाचन में कांग्रेस (आई) के टिकट पर उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । वह 1973 से 77 तक गन्ना राज्य मंत्री रहे। वह विशेष रूप से गन्ना किसानों से जुड़े रहे। उनका गन्ना उत्पादक अपना प्रेरणा का श्रोत मानते थे । उन्होंने गन्ना किसानों के लिए बड़ी लड़ाइयां लड़ीं । शासन के पद पर रहकर उन्होंने अपने दायित्व का निर्वाहन किया । उनके चले जाने से हम सभी दुखी हैं । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना है कि मेरी श्रद्धांजलि उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

नेता विरोधी दल (श्री कैलाश नाथ सिंह यादव)—

मान्यवर, सर्वश्री रतन स्वरूप, बुलन्दशहर, राम लक्षण तिवारी, बलिया, विजय बहादुर सिंह, मिर्जापुर, राजेन्द्र सिंह यादव, फर्रुखाबाद, भगवती प्रसाद सिंह, फैजाबाद, वासुदेव दीक्षित, फतेहपुर, गौरी शंकर राय, बलिया, महादेव वर्मा, फैजाबाद, मुख्तार अहमद किदवई, फैजाबाद, श्रीनाथ सिंह, वाराणसी और शौनाथ सिंह, बिजनौर के निधन से मुझे दुख पहुंचा है । माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो शोकोद्गार माननीय सदस्यों के प्रति व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । इन सभी माननीय सदस्यों ने अपने क्षेत्र में और प्रदेश में बड़ी सेवा की है । कुछ लोग अल्पायु में ही दिवंगत हो गये और कुछ अपनी उम्र पूरी करके दिवंगत हुए । उनकी सेवाओं के लिए प्रदेश सदैव याद करेगा । माननीय मुख्य मंत्री जी ने करीब-करीब सभी के विषय में पूरा प्रकाश डाल दिया है । गौरी शंकर राय जी एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, जिन्होंने इस सदन में, परिषद् में और संसद में अपना योगदान दिया है । वह इमरजेन्सी में फरार रहे । हम उसके बाद जेल में रहे । वर्ष 1978 में उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के प्रतिनिधि के रूप में जाने का अवसर मिला । वह बड़े ही निर्भीक थे । उनके निधन से न केवल हमने

इस सदन के सदस्य को खो दिया दिया है, बल्कि एक कुशल सांसद को भी खो दिया है। श्री श्रीनाथ जी मेरे मित्र थे और उनका चुनाव क्षेत्र मेरे लोक सभाई क्षेत्र में पड़ता है । जब वह अपने दल के राष्ट्रीय नेता के स्वागत के लिए बाबतपुर हवाई अड्डे पर जा रहे थे तो उनकी जीप से दुर्घटना हो गयी, जिसमें उनको काफी चोट आई और पैर उनका अपंग हो गया और जिससे उनको काफी कष्ट पहुंचा और दुर्भाग्य से उनकी दूसरी दुर्घटना हो गयी और मिर्जापुर से लौटते समय उनकी मृत्यु हो गयी । वह हिन्दी के प्रति समर्पित थे और काशी नागरी प्रचारिणी सभा में रहकर उन्होंने हिन्दी की बड़ी सेवा की है । उनके निधन से पूर्वांचल को गहरा धक्का लगा है । महादेव वर्मा जी जीवन भर पिछड़ों के लिए लड़ते रहे और हमारा दुर्भाग्य है कि वह आज हमारे बीच नहीं रहे । उन्होंने पिछड़ों को आगे बढ़ाने का काम किया । मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवांगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे । मेरी और मेरे दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि उनके परिवार तक पहुंचा दें और उन्होंने इस सदन में रहकर जो भी मार्ग दर्शन दिया, उससे हम प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें ।

*श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, किसी न किसी अवसर पर इस सम्मानित सदस्य के जो सदस्य रहे उनको आज हम लोग स्मरण कर रहे हैं इनमें श्री रतन स्वरूप, श्री रामलक्षण तिवारी, श्री विजय बहादुर सिंह, श्री राजेन्द्र सिंह यादव, श्री भगौती प्रसाद सिंह, श्री वासुदेव दीक्षित, श्री गौरी शंकर राय, श्री महादेव, श्री मुख्तार अहमद किदवई, श्री श्रीनाथ सिंह और श्री शंभूनाथ सिंह इन सभी के निधन पर अपना शोक प्रकट करते हुए आदरणीय नेता सदन, नेता विरोधी दल ने जो उद्गार व्यक्त किये हैं, मैं और मेरा दल उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं । ये उन्हें अपने और अपने दल की ओर से हृदय से संवेदना अर्पित करता हूं ।

श्री रतन स्वरूप जी इस सम्मानित सदन में 1985 चुन कर आये । उनके साथ रहने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। वह सफाई मजदूरों के हितों के लिए जीवनपर्यन्त लड़ते रहे । वह सदा मेरे पास अपने निर्वाचन क्षेत्र के लिए और विशेषरूप से सफाई मजदूरों के हितों और उनकी आवाज बुलन्द करने के लिये आते रहे ।

श्री राम लक्षण तिवारी जी बलिया के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, और ग्रामीण अंचलों के विकास के लिये सदा सर्वदा जुड़े रहे । जिला परिषद् के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने जो योगदान दिया है उसकी सदा सर्वदा सराहना की जाती रहेगी ।

श्री विजय बहादुर सिंह, मिर्जापुर जनपद के थे और उन्होंने अपने जीवनकाल में भरपूर समाज सेवा की । उनके निधन से मिर्जापुर ने एक कुशल समाज सेवी खो दिया है ।

भूतपूर्व सदस्य राजेन्द्र सिंह जी के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तो उनका आकर्षक व्यक्तित्व सामने नजर आ रहा है । इस सम्मानित सदन में मुझे 1980 में उनके साथ रहने का अवसर मिला । वह बहुत ही प्रतिभाशाली और लोकप्रिय नेता

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

थे इसका अंदाजा इस बात से लग जाता है कि वह 1957, 1962, 1967, 1974, 1977 और 1980 में लगातार निर्वाचित होते रहे । जिस प्रकार मतदाताओं ने उन पर विश्वास प्रकट किया वह अपने आप में एक नजीर है । उनके निधन से जहां फर्रुखाबाद जनपद ने एक कुशल राजनीतिज्ञ और समाजसेवी खो दिया है वहीं कांग्रेस ने भी अपना मजबूत सिपाही खो दिया है । मैं व्यक्तिगत रूप से उनको जानता था और मेरे मित्र थे उनकी अपूरणीय क्षति को मैं अपनी व्यक्तिगत क्षति मानता हूं और उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं ।

श्री भगौती प्रसाद सिंह के निधन से फैजाबाद ने एक कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया है । वह लगातार जीवन भर समाजसेवा में लगे रहे और बाद के दिनों में कम्यूनिस्ट पार्टी से जुड़े रहे । उन्होंने गरीबों और पिछड़े वर्ग के लोगों की सेवा की ।

श्री वासुदेव दीक्षित जी फतेहपुर जनपद के कुशल समाजसेवी थे स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध लड़ते हुए कई बार जेल गये, कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में 1957 में खागा से निर्वाचित हुये ।

श्री गौरीशंकर राय का नाम लेते ही उनका विशाल व्यक्तित्व सामने नजर आता है । वह जहां भी रहे जिस रूप में रहे सदैव सामाजिक आन्दोलनों से जुड़े रहे । मजदूरों, गरीबों और पिछड़े वर्ग के लोगों की सेवा करते रहे और जहां कहीं भी उनके साथ अन्याय होता था वह लड़ने के लिये आगे आ जाते थे समाजसेवा के लिये जितना कह दिया जाय उतना कम है । मैं उनको हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

इसी क्रम में श्री महादेव जी फैजाबाद के कुशल समाजसेवी और राजनीतिज्ञ थे उनके निधन से फैजाबाद ने अपना कुशल नेता खो दिया है ।

श्री मुख्तार अहमद किदवई भी फैजाबाद ही के थे वह एक कुशल राजनेता और राष्ट्रवाद से ओतप्रोत थे, वह मजदूरों के सेवक और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे और भारत छोड़ो आन्दोलन से वह जुड़े थे ।

मान्यवर, श्री श्रीनाथ सिंह का जिक्र आते ही उनका हंसता हुआ चेहरा सामने नजर आता है 1980 में जब वह सदस्य बने तो धर्मवीर जी तत्कालीन प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष को लेने गये हुये थे हवाई अड्डे से लौटते समय दुर्घटना में उनका पैर जाता रहा और जीवनभर पैरों में सहारे की जरूरत पड़ी जो काफी उपचार के बाद ठीक हुआ । लेकिन जिस दृढ़ता के साथ वह बोलते थे, हास्य-परिहास से बोलते थे और जिस तरह से हर एक के साथ वह मैत्री भाव व्यक्त करते थे उसकी एक मिसाल है । वह पहले विधान सभा सभा के सदस्य रहे तो हर विषय पर बोलते थे । हिन्दी के प्रखर भक्त थे । उन्होंने अपने क्षेत्र की बात हो या बनारस की बात हो बड़ी मजबूती के साथ यहां उठाते थे । वह श्री नारायण दत्त तिवारी जी के मंत्रिमंडल में राज्य मंत्री भी रहे और प्रदेश की सेवा की ।

मान्यवर, इसी तरह से श्री शनिाथ सिंह का जब जिक्र आता है तो बिजनौर में उनका जन्म हुआ था । चौधरी साहेब के मंत्रि मंडल में जब उन्हें शपथ दिलाने की बात आयी तो मंत्री पद की शपथ लेने से उन्होंने इंकार कर दिया और कहा था कि जनता की सेवा के लिये मंत्री होना कोई जरूरी नहीं होता और मंत्री पद की शपथ नहीं लिया था ।

जीवन पर्यन्त वह किसान आन्दोलन से जुड़े रहे और विशेष रूप से गन्ना किसानों की आवाज उठाते रहे और सर्वोच्च पद पर रहकर जैसे अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सदस्य के रूप में रहकर गन्ना किसानों के आन्दोलन को नई दिशा दी और मजदूरों को उनका हक दिलाया और प्रदेश की सेवा की ।

मान्यवर, आज इन सब के हमारे बीच में न रहने से हम सभी शोकाकुल और दुखी हैं । इन सब ने अपने-अपने जीवन में जनता की बहुमूल्य सेवा की है, इसलिये सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम इनके बताये हुए आदर्शों पर चलें और उनको आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहें ।

इन शब्दों के साथ मान्यवर, मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप मेरी ओर से, मेरे दल कांग्रेस की ओर से शोक सम्वेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री बेनी प्रसाद वर्मा–

मान्यवर, इस सदन के माननीय 11 भूतपूर्व सदस्य आज हमारे बीच में नहीं रहे । इन सब के निधन से प्रदेश की राजनीति में एक अपूर्णनीय क्षति हुई है । मान्यवर, इनके संबंध में जो विचार मा0 नेता सदन, मा0 नेता विरोधी दल, मा0 नेता कांग्रेस पार्टी ने व्यक्त किये हैं हम अपने को और समाजवादी पार्टी जनता पार्टी को उनसे सम्बद्ध करते हैं ।

मान्यवर, श्री रतन स्वरूप जी इस सदन के 1985 के सामान्य निर्वाचन में बुलन्दशहर जनपद से चुने गये थे । उनके साथ हमको भी काम करने का अवसर मिला । वह बहुत ही अच्छे जनपद के लोकप्रिय नेता थे । उनके निधन से निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी कमी आयी है । जिसका पूरा करना संभव नहीं है ।

श्री रास लक्षण तिवारी जी जनपद बलिया के बांसडीह निर्वाचन क्षेत्र से 1957 के आम चुनाव में इस सदन के सदस्य चुनकर आये और सदन की सेवा की, उनके निधन से बलिया जनपद की राजनीति में बहुत बड़ी रिक्तता आयी है ।

मान्यवर, इसी तरह से श्री विजय बहादुर सिंह का निधन 17 फरवरी, 1991 को 63 वर्ष की आयु में हुआ । मिर्जापुर से वह जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में 1969 के सामान्य निर्वाचन में इस सदन की सदस्यता के लिये चुने गये थे, उनके निधन से हम सब लोगों को बहुत दुख है ।

मान्यवर, श्री राजेन्द्र सिंह यादव जो इस सदन के कई बार सदस्य निर्वाचित हुये हम सब लोगों के बहुत ही निकट के उनसे संबंध थे। यह फर्रुखाबाद जनपद के राजनीति के एक स्तम्भ माने जाते थे । उनके पुत्र इस बार विधान सभा में चुनकर आये हैं । श्री राजेन्द्र जी के निधन से निश्चित रूप से प्रदेश की और फर्रुखाबाद की राजनीति में एक बहुत बड़ी रिक्तता आयी है जिसकी पूर्ति असम्भव है। हम सभी को उनके निधन से बहुत दुःख है । आपसे अनुरोध है कि उनके परिवार तक आप हमारे दल की संवेदनाएं भेजने का कष्ट करें । श्रीमन्, भगौती प्रसाद सिंह जी हमारे साथ दो बार इस सदन में निर्वाचित होकर आए। फैजाबाद जनपद से मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के एक प्रचण्ड नेता के रूप में वह उभड़े थे । वह हमारे व्यक्तिगत मित्र भी थे, उनके निधन से फैजाबाद जनपद ही नहीं, बल्कि कम्युनिस्ट आन्दोलन को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है । उनके निधन से हमें और हमारे दल को महान दुःख है । श्रीमन्, श्री

बासुदेव दीक्षित जी इस सदन में प्रथम बार 57 के आम चुनाव में चुनकर आए थे और 83 वर्ष की अवस्था में उनका निधान हुआ । उनके निधन से फतेहपुर जनपद की राजनीति में एक बहुत बड़ी रिक्तता आई है । मैं श्रीमन्, आपसे अनुरोध करूंगा कि आप उनके परिवार तक हमारी श्रद्धांजलि भेजने का कष्ट करें । गौरी शंकर राय जी को प्रदेश के सभी प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक लोग जानते हैं । इस प्रदेश की सेवा उन्होंने बहुत दिनों तक की है । हमारे इस सदन में भी और विधान परिषद् में भी वह रहे । 1974 में लोकदल में रहे और नेता विरोधी दल के रूप में भी परिषद् में रहे । उन्होंने बहुत ही प्रमुख ढंग से और सक्रियता से अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया है । वह लोक सभा के भी सदस्य रहे । समता आन्दोलन में भी उन्होंने जेल यात्रा की । इस महान व्यक्ति के निधन से निश्चित रूप से राजनीति में रिक्तता आई है । उनके निधन से हमें और हमारे दल को खेद है और आपसे अनुरोध करूंगा कि आप उनके परिवार तक हम लोगों की संवेदना भेजने का कष्ट करें ।

श्रीमन्, महादेव प्रसाद जी हम लोगों के नेता थे और हमने व्यक्तिगत रूप से, उनसे राजनीति में बहुत कुछ सीखा है । यद्यपि उनकी मृत्यु एक तरह से पूरी आयु के बाद हुई है, फिर भी अभी वह समाज को अपने बहुमूल्य विचार दे सकते थे । उनके निधन से हमको विशेष रूप से और हमारे दल को खेद है । आपसे अनुरोध है कि उनके परिवार तक हमारी और हमारे दल की शोकसंवेदना आप भेजने का कष्ट करें ।

श्रीमन्, श्री मुख्तार अहमद किदवई फैजाबाद जनपद के प्रमुख नेताओं में से थे । वह उर्दू, फारसी, अरबी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं के सिर्फ जानकार ही नहीं, इन भाषाओं में वह धारा प्रवाह भाषण भी दे सकते थे । कांग्रेस पार्टी के वह एक लम्बे समय तक फैजाबाद जनपद के अध्यक्ष रहे । हम सब लोग उनका बहुत सम्मान करते थे, यद्यपि उनका दल अलग था । उनके निधन से एक विद्वान राजनीतिज्ञ की कमी हमारे प्रदेश में और विशेष रूप से फैजाबाद में हुई है । मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप उनके परिवार तक हमारी संवेदना भेजने का कष्ट करें । हमारे श्रीनाथ सिंह जी बनारस जनपद के थे । उनकी मृत्यु से हमें और हमारे दल को विशेष खेद है, कष्ट है । आपसे अनुरोध है कि आप हमारी श्रद्धांजलि उनके परिवार तक भेजने का कष्ट करें । श्रीमन्, श्री श्रीनाथ सिंह जी गन्ना किसानों में बहुत दिनों तक याद किये जाएंगे, जिन गन्ना किसानों के हितों के लिए उन्होंने लम्बी लड़ाई लड़ी । जैसा कि कांग्रेस पार्टी के नेता ने बताया, गन्ना संस्थाओं के तमाम शीर्षस्थ पदों पर रहकर, उन्होंने गन्ना किसानों की विशेष रूप से सेवा की है । हमारा भी उनके साथ निकट का परिचय था । उनके निधन से पूरे प्रदेश के गन्ना किसानों को दिशा देने वाला हमारे बीच नहीं रहा । आपसे प्रार्थना करूंगा कि उनके परिवार तक हमारी शोक श्रद्धांजलि आप भेजने का कष्ट करें । इन सब ग्यारह महत्वपूर्ण सदस्यों के निधन के संबंध में हमारी आपसे प्रार्थना है कि हमारी समाजवादी जनता दल की शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट कर? ।

*श्री राम लखन–

मान्यवर, भूतपूर्व सदस्यों स्वर्गीय रत्नस्वरूप बुलन्दशहर, श्री रामलक्षण तिवारी बलिया, श्री विजय बहादुर सिंह मिर्जापुर, श्री राजेन्द्र सिंह यादव फर्रुखाबाद, श्री भगौती

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

प्रसाद सिंह फैजाबाद, श्री वासुदेव दीक्षित फतेहपुर, श्री गौरी शंकर राय बलिया, श्री महादेव फैजाबाद, श्री मुख्तार अहमद किदवई फैजाबाद, श्री श्रीनाथ सिंह वाराणसी, श्री शौनाथ सिंह, बिजनौर के प्रति जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन, नेता जनता दल, नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, नेता समाजवादी जनता पार्टी ने अपने विचार व्यक्त किए हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, मेरा दुर्भाग्य है कि इन ग्यारह सदस्यों में से श्री भगौती सिंह, श्री महादेव, श्री मुख्तार अहमद किदवई मेरे ही जनपद फैजाबाद के हैं । श्री भगौती सिंह, जिनके विषय में मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूं मेरे विधान सभा क्षेत्र से इस विधान सभा के लिए दो बार चुन कर आये थे और मेरे ही विधान सभा क्षेत्र के थे । स्वर्गीय भगौती प्रसाद सिंह कम्युनिस्ट विचारधारा के थे । कम्युनिस्ट पार्टी से चुनकर आये थे । वह बहुत ही ईमानदार और कर्मठ व्यक्ति थे । उन्होंने अपने जीवन में राजनीति के क्षेत्र में काफी कार्य किया । आज वह हमारे बीच नहीं हैं । स्वर्गीय श्री महादेव जी जिनको हम लोग अपना राजनीतिक गुरु मानते हैं जनपद फैजाबाद गुसाईंगंज क्षेत्र के रहने वाले थे । उन्होंने अपने जीवन-काल में पिछड़ों को उठाने के लिए, उनकी तरक्की के लिये जीवन पर्यन्त लड़ाई लड़ी । श्री महादेव जी स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह के एक्के अनुयायी थे और मरते दम तक उन्हें नहीं भूले, उन्हीं की पार्टी के साथ रहे । मान्यवर, श्री मुख्तार अहमद किदवई जो मेरे गृह जनपद फैजाबाद के टाण्डा कस्बे के निवासी थे बहुत ही अधिक देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी और अल्प संख्यकों के मसीहा थे । उन्होंने जीवन पर्यन्त अल्पसंख्यकों की भलाई के लिए लड़ाई लड़ी । आज हमारे बीच यह ग्यारह महान विभूतियां नहीं हैं । मैं आपसे निवेदन करूंगा कि मेरी तरफ से, मेरे दल बहुजन समाज पार्टी की तरफ से शोक सम्वेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री ऊदल–

मान्यवर, श्री रत्नस्वरूप बुलन्दशहर, श्री रामलक्षण तिवारी बलिया, श्री विनय बहादुर सिंह मिर्जापुर, श्री राजेन्द्र सिंह शाद फर्रुखाबाद, श्री भगौती प्रसाद सिंह फैजाबाद, श्री वासुदेव दीक्षित फतेहपुर, श्री गौरी शंकर राय बलिया, श्री महादेव फैजाबाद, श्री मुख्तार अहमद किदवई फैजाबाद, श्री श्रीनाथ सिंह वाराणसी, श्री शौनाथ सिंह बिजनौर यह ग्यारह माननीय सदस्य आज हमारे बीच नहीं हैं । यह हमारे भूतपूर्व माननीय सदस्य हैं जिन्होंने वर्षों विधान सभा में रहकर प्रदेश की सेवा की है और प्रदेश के लिए इन लोगों ने अच्छे-अच्छे कार्य किए । इसमें मान्यवर, रामलक्षण तिवारी जी, महादेव प्रसाद वर्मा जी, मुख्तार अहमद किदवई जी, गौरीशंकर राय जी, मैं समझता हूं कि इन लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की । मैं रामलक्षण तिवारी जी को व्यक्तिगत रूप से जानता हूं बहुत अच्छे व्यक्ति, देशभक्त और महान क्रान्तिकारी थे । इसी तरह से स्वर्गीय मुख्तार अहमद किदवई जिनके अन्दर कोई दुर्भावना किसी के प्रति नहीं थी । वह सच्चे देशभक्त थे । उनको कई भाषाओं की जानकारी भी थी । श्रीमन्, महादेव प्रसाद वर्मा जी मेरे साथ यहां भी थे और प्रखर वक्ता के साथ ही बहुत विद्वान भी थे । मेरे ख्याल से वह प्रधानाचार्य भी थे। गोसाईंगंज इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य भी वह थे । जिसकी स्थापना महादेव प्रसाद वर्मा जी और स्वर्गीय जयराम प्रसाद वर्मा जी ने की थी, और उसके महादेव प्रसाद वर्मा जी प्रधानाचार्य थे । महादेव प्रसाद वर्मा जी ने कई किताबें भी लिखी हैं । जो पिछड़ा वर्ग

था उसके वह प्रणेता थे इन्होंने पिछड़े वर्ग के उद्धार के लिए कोई कोर-कसर उठा कर नहीं रखी थी ।

स्वर्गीय भगौती प्रसाद सिंह जो हमारे दल से संबंधित थे बाद में मार्क्सवादी पार्टी से चले गये, वह थोड़े लड़ाकू किस्म के व्यक्ति थे । कभी-कभी वह अध्यक्ष महोदय से भी लड़ जाया करते थे । वह सादी वेशभूषा में रहते थे उनका जीवन सादा जीवन और उच्च विचार से प्रेरित था ।

स्वर्गीय श्री नाथ सिंह जी एक बार आ रहे थे उनका ऐसा एक्सीडेंट हुआ कि हम लोग सोच रहे थे कि अब यह नहीं बचेंगे, लेकिन वह उस बार बच गये थे और बैसाखी के सहारे से चलते थे । इस साल फिर उनका एक्सीडेंट हुआ और उनकी मृत्यु हो गई । यह राज्यमंत्री के रूप में भी काम किए थे । इन्होंने प्रदेश की काफी सेवा की है । इनके निधन से काफी नुकसान हुआ है ।

स्वर्गीय श्री विजय बहादुर सिंह जी, रत्नस्वरूप जी, राजेन्द्र सिंह यादव जी, शीनाथ सिंह जी के प्रति जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन तथा अन्य माननीय नेताओं ने व्यक्त किए हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं तथा आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी संवेदनायें और हमारी श्रद्धांजलि उनके दुखी परिवारजनों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री दीनानाथ सिंह यादव–

मान्यवर, 11 भूतपूर्व माननीय सदस्यों के निधन पर मैं अपनी तथा अपनी पार्टी की तरफ से शोक व्यक्त करता हूं और माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य नेतागणों ने जो अपने शोकोद्गार व्यक्त किए हैं उनसे अपने को तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, श्री भगौती सिंह हमारी पार्टी के बहुत लम्बे अरसे तक सदस्य थे । मुझे उनके साथ राज्य कमेटी में लम्बे समय तक काम करने का मौका मिला था । वह पार्टी के बहुत ही अनुशासित सिपाही थे और पार्टी के अनुशासन को, पार्टी की नीतियों और पार्टी के कार्यक्रमों को मानकर चलना, उसमें आस्था रखना, निष्ठा रखना उनके जीवन का एक अभिन्न अंग था । वह पैदा तो एक बहुत ही सम्पन्न परिवार में हुए थे मगर उनका रहन सहन, उनका खानपान उनका जीवन बहुत ही सीधासाधा था । गरीबों के प्रति, मजदूरों के प्रति, पिछड़े लोगों के प्रति उनके दिल में बहुत गहरी श्रद्धा थी और गहरा प्रेम था । मुझे याद है कि जब कभी हम नये साथी जो राज्य कमेटी में उनके साथ आये थे, जब बैठकों में मिलते थे हाल चाल पूछते-पूछते वह अपने गले लगा लिया करते थे । कभी-कभी उनकी आंख में आंसू भी आ जाते थे । अपने साथियों का वह हालचाल पूछते थे और उनके दुख दर्द में शामिल होते थे । वह पार्टी के वरिष्ठ सदस्यों में से थे । उनके निधन पर मैं अपनी तरफ से क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

मान्यवर, हमारे जिले के ही श्रीनाथ जी थे । मैं उनको अपने राजनीतिक जीवन में पदार्पण करने के पहले से जानता हूं । मेरे एक रिश्तेदार के साथ वह बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी में पढ़ते थे । मुझे कभी-कभी काशी नागरी प्रचारिणी सभा में जाने का मौका

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मिलता था । मैंने देखा है कि वह बड़े ही स्पष्टवादी और निर्भीक थे । जैसा कि हमारे माननीय नेता ऊदल जी ने कहा, दुर्भाग्य से कुछ वर्ष पहले एक जीप दुर्घटना में उनके दोनों पैर खराब हो गये थे । उसके बाद भी उनमें इतनी हिम्मत थी कि वह विधान सभा के सदस्य चुने गये और कुछ दिन पहले पुन: जीप दुर्घटना में वह मिर्जापुर से अपने घर बनारस जा रहे थे, एक भयानक दुर्घटना हो गयी और वह मौत का शिकार हो गये । उनके निधन पर मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा शेष जो हमारे 9 भूतपूर्व सदस्य हैं उनके प्रति अपनी तरफ से अपनी पार्टी की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं, गुजारिश करता हूं कि हमारी और हमारी पार्टी की तरफ से शोक संवेदना संदेश उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

*श्री राम स्वरूप वर्मा–

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन के भूतपूर्व सदस्य माननीय श्री रतन स्वरूप, बुलन्दशहर, श्री राम लक्षण तिवारी, बलिया, श्री विजय बहादुर सिंह, मिर्जापुर, श्री राजेन्द्र सिंह यादव, फर्रुखाबाद, श्री भगौती प्रसाद सिंह, फैजाबाद, श्री वासुदेव दीक्षित, फतेहपुर, श्री गौरीशंकर राय, बलिया, श्री महादेव, फैजाबाद, श्री मुख्तार अहमद किदवई, फैजाबाद, श्री श्रीनाथ सिंह, वाराणसी, श्री शनिाथ सिंह, बिजनौर के निधन से हमें बहुत दुख है ।

मान्यवर, ये सब समाजसेवी लोगों के प्रति जो विचार, शोकोद्गार नेता सदन, नेता विरोधी दल एवं अन्य नेताओं ने प्रकट किये हैं, मैं उनसे अपने को और अपने को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, श्री महादेव प्रसाद वर्मा के साथ आपातकाल में 1976-77 में माडल जेल, लखनऊ में रहने का संयोग हुआ था । हमने देखा कि उनमें पिछड़ों की मुक्ति के लिये इतना ज्यादा उत्साह था कि कभी-कभी घंटों बात करते थे और इस बात पर चिंता व्यक्त करते थे आखिर पिछड़े लोग चले क्यों नहीं रहे हैं । इतने समाजसेवी लोगों के इस दुनिया से उठ जाने से जो रिक्तता पैदा हुई है, उसकी पूर्ति मुश्किल होगी । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवारों तक भेजने का कष्ट करें ।

*श्री पवन कुमार पाण्डेय–

मान्यवर, माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता कांग्रेस, नेता जनता पार्टी, नेता बहुजन समाज पार्टी और अन्य दलों के नेताओं ने जिन माननीय सदस्यों के निधन पर जो विचार संवेदनाएं व्यक्त की हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । श्रीमन् एक साथ इतनी अधिक विभूतियों का हम लोगों के बीच से उठ जाना, समाज एवं राजनीति के क्षेत्र में बहुत बड़ी रिक्तता उत्पन्न करता है, जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है । अत: मैं सभी दलों के सदस्यों से अनुरोध करता हूं कि इस अवसर पर सभी दलगत विचारों से अपने को ऊपर उठाकर प्रदेश की सेवा करने का संकल्प लें । मैं अपनी और अपने दल की ओर से सभी भूतपूर्व सदस्यों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । माननीय सदस्यों, जिनका निधन हुआ है, उनके परिवार के सदस्यों तक मेरी संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय निर्दलीय विधायक यदि संवेदनाएं प्रकट करना चाहते हों तो करें ।

*श्री कृष्ण किंकर सिंह–

गान्धार, श्री रतन स्वरूप, बुलन्दशहर, श्री राम लक्षण तिवारी, बलिया, श्री विजय बहादुर सिंह, मिर्जापुर, श्री राजेन्द्र सिंह यादव, फर्रुखाबाद, श्री भगौती प्रसाद सिंह, फैजाबाद, श्री वासुदेव दीक्षित, फतेहपुर, श्री गौरीशंकर राय, बलिया, श्री महादेव, फैजाबाद, श्री मुख्तार अहमद किदवई, फैजाबाद, श्री श्रीनाथ सिंह, वाराणसी और श्री शौनाथ सिंह, बिजनौर के सिलसिले में जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल जी, और अन्य दलों के माननीय नेताओं ने व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को तथा अपने निर्दलीय साथियों को सम्बद्ध करता हूं और उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री अध्यक्ष–

काल-चक्र कभी स्थिर नहीं रहता । उसकी गति परिवर्तनशीलता को द्योतक है और इस परिवर्तन के क्रम में मनुष्य का संसार में आना और यहां से जाना है । हमारे इस सदन के भूतपूर्व 11 सदस्य इसी क्रम में हमसे बिछड़ गये । उनमें से कुछ एक-एक तार इस सदन के सदस्य थे और कुछ ने एक से अधिक बार भी इस सदन की शोभा बढ़ायी । हमें उनके निधन से खेद है । इनमें से कई सम्मानित सदस्यों से मेरा व्यक्तिगत परिचय था । श्री विजय बहादुर सिंह जो मिर्जापुर से निर्वाचित होकर आए थे, मेरे व्यक्तिगत मित्रों में थे । निर्भीकता उनकी व्यक्तिगत विशेषता थी । अन्याय बरदाश्त नहीं करते थे । श्री राजेन्द्र सिंह जी मेरे साथ विधायक रह चुके थे, बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व के व्यक्ति थे, उनकी वाणी में अपने नजदीक खींच लेने की क्षमता थी । श्री भगौती प्रसाद सिंह शांत प्रकृति के थे, विनम्र स्वभाव के थे । श्री गौरी शंकर राय अपनी बात को बड़े स्पष्ट रूप से कहने वाले थे, दो टूक कह देते थे, कोई बात अप्रिय लगे तो अपनी भावना व्यक्त करते थे और कोई बात प्रिय लगे, तो उनके व्यवहार से लगता था कि कोई चीज उनको प्रिय लगी थी । श्री श्रीनाथ सिंह जी उत्तर-प्रदेश में बहुत ही लोकप्रिय थे, राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान हम भूल नहीं सकते । इन सबसे मेरा परिचय व्यक्तिगत था । श्री रतन स्वरूप जी बुलन्दशहर से चुनकर आये थे, श्री राम लक्षण तिवारी बलिया से चुनकर आये थे, श्री महादेव जी, फैजाबाद से चुनकर आये थे, श्री मुख्तार अहमद किदवई (फैजाबाद), श्री शौनाथ सिंह (बिजनौर) सदन में सम्मानित सदस्य के रूप में थे और जब सदन में सदस्य नहीं थे, तो बाहर रहकर भी अपने कार्य-कलापों से उन्होंने मार्ग-दर्शन किया है । हम सब इनके निधन से दुःखी हैं । मैं नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य सभी नेताओं के विचारों से अपने को सम्बद्ध करते हुए, दिवंगत आत्मा की शांति की कामना करता हूं । मैं यह भी कामना करता हूं कि उनके परिवार के सदस्यों को ईश्वर इस हानि को सहन करने की क्षमता प्रदान करे । माननीय सदस्य स्वर्गीय आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि देने के लिए अपने आसन पर दो मिनट के लिए उनके सम्मान में मौन खड़े हों ।

(सभी माननीय सदस्य स्वर्गीय आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि देने के लिए अपने आसन पर दो मिनट के लिए मौन खड़े हुए ।)

श्री अध्यक्ष–

कृपया आसन ग्रहण करें । इस सदन में जो माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और अनेक नेताओं ने अपनी शोक संवेदनाएं व्यक्त की हैं वह सभी दिवंगत आत्माओं के परिवारजन को पहुंचा दी जायेगी ।

अब हम उठते हैं कल पुनः 11 बजे बैठेंगे ।

(इसके बाद 12 बजकर 22 मिनट पर/अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया ।)

प्रेमचन्द्र सक्सेना,

लखनऊः

सचिव, विधान सभा,

1 अगस्त, 1991

उत्तर प्रदेश ।

संसद टीवी आर्काइव

पी0 एस0 यू0 सी0–एस0 147 विधान सभा (256)–1991–813 ।